Himalaya Jyotish Remedies (Hindi)

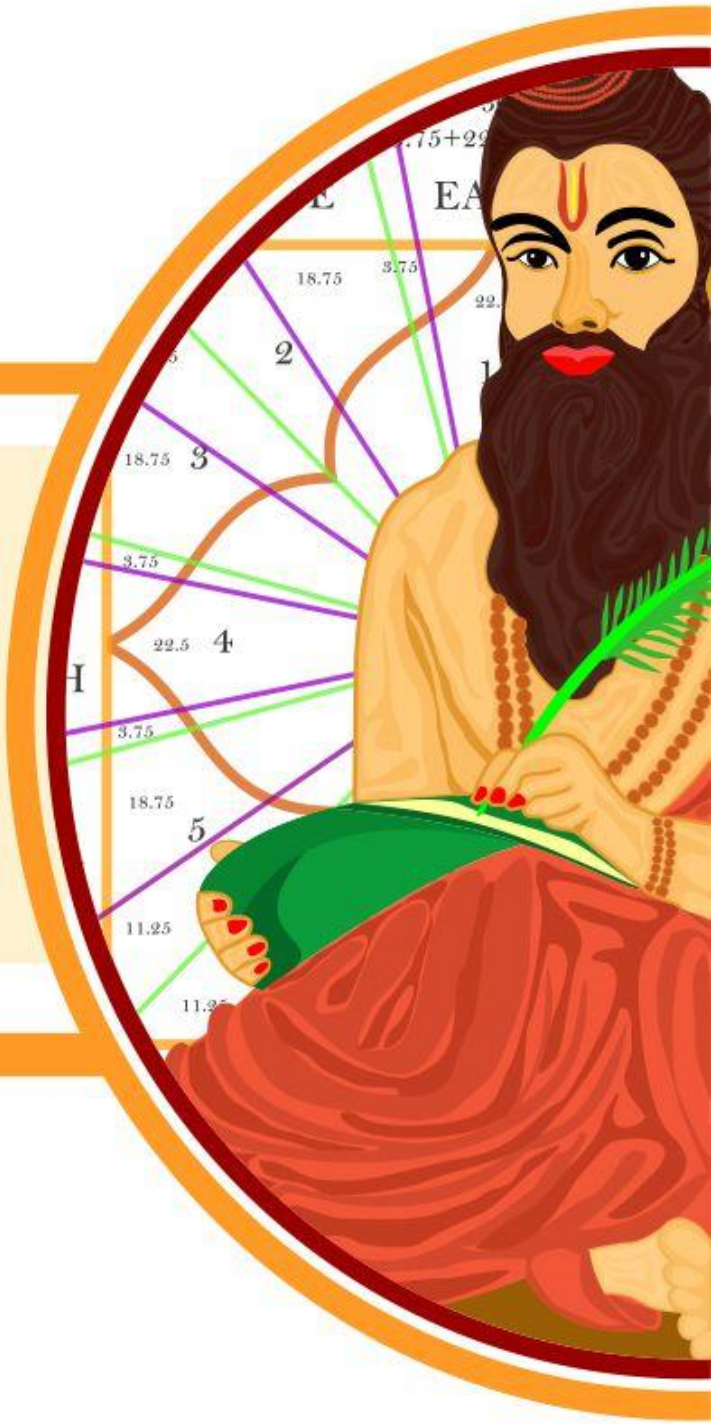

Name - Sample

Date - 18/01/1975 Time - 17:30:00

POB - Ballia (Uttar Pradesh) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Himalaya Vedic World

Phone +91-7465839601

himalayavedicworld.com

लग्न दर्शन – कर्क

कर्क राशि, राशि चक्र की चौथी राशि है और इस राशि का स्वामी चन्द्रमा है तथा यह जल तत्व की राशि है। कर्क राशि में गुरु उच्च का तथा मंगल नीच राशि का माना जाता है। आपका कद लम्बा, गोरा रंग तथा शरीर दुबला होगा, परन्तु उन्नत ललाट, लम्बी भुजाएँ तथा चौड़ा सीना आपके व्यक्तित्व में आकर्षण उत्पन्न करेंगे और आप शारीरिक रूप से आप सुन्दर होंगे। आपकी सेहत ठीक रहेगी, किन्तु आपको पित्त रोग, छाती तथा फेफड़ों के रोगों, ज्वर, सर्दी से होने वाले रोगों से कष्ट हो सकता है, इसके अलावा आपको मध्य आयु के बाद रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) तथा नर्वस सिस्टम से सम्बन्धित बीमारियाँ भी होने का खतरा हो सकता है।

आपका जन्म कर्क लग्न में होने से आप सहिष्णु, सहनशील, नम्र तथा भावुक होंगे। आप शारीरिक श्रम करने में अक्षम, किन्तु मानसिक श्रम में अति उत्तम सिद्ध होंगे। आप सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे, क्योंकि भावुक होते हुए भी आत्म–विश्वास की आप में कमी नहीं होगी, इस कारण आप विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोयेंगे तथा उन परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करेंगे।

आपकी बुद्धि पर भावनायें प्रबल रहेंगी, कभी–कभी भावनाओं के प्रवाह में आप अपना अहित भी कर सकते हैं। सामाजिक रुढ़ियों में आप विश्वास नहीं करेंगे और नये विचारों और आदर्शो को आप शीघ्रता से ग्रहण करेंगे। आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आपका अपनी पत्नी तथा बच्चों से प्रेम रहेगा, किन्तु यह प्रेम अन्त तक नहीं रहेगा और कभी–कभी आपसी मतभेद अलगाव का रूप भी ले सकते हैं।

ईमानदारी और न्यायप्रियता आपको सर्वत्र प्रशंसा का पात्र बनायेंगी और आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र आपके मददगार भी सिद्ध होंगे। आपके शत्रुओं की संख्या कम होगी तथा ये आपका कुछ भी अनिष्ट नही कर पायेंगे। आप शैक्षणिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में भी सफल हो सकते हैं। आप प्रोफेसर, राजनेता, वकील, न्यायाधीश, सरपंच, शिक्षा क्षेत्र से सम्बन्धित कार्य करेंगे। व्यावसायिक क्षेत्रों में भी आपको सफलता प्राप्त होगी, किन्तु यथार्थता पर भावनाएँ छा जाने से कभी–कभी आपको हानि भी उठानी पड़ सकती है।

आपका जन्म कर्क लग्न में 03 अंश 20 कला से 06 अंश 40 कला के बीच में होने से आप औसत से कुछ लम्बे, गौरवर्ण तथा बलिष्ठ शरीर वाले व्यक्ति होंगे। आपका उन्नत सीना, मज़बूत व लम्बी भुजाएँ आपके व्यक्तित्व को उभारने में सहायक होंगे।

आपकी सेहत खराब हो सकती है और निमोनिया, तिल्ली व हृदय की बीमारियाँ, कण्ठ, फेफड़े सम्बन्धी रोग, रक्तचाप, वात रोग आदि रोगों से आप पीड़ित हो सकते हैं, इसके अलावा आपको वृद्धावस्था में बहरापन होने की सम्भवना भी रहेगी। अपने परिजनों पर भी आपको पूरा विश्वास नहीं होगा और आपका पारिवारिक जीवन सामान्य रहेगा। आपको सन्तान सुख भी मिलेगा, परन्तु

himalayavedicworld.com

आप दोनों पिता–पुत्र में आपसी मतभेद हो सकते हैं।

आप साहसी, दृढ़ व महत्वकांक्षी व्यक्ति होंगे, साथ ही आप केवल भावना के बहाव में न बहकर व्यावहारिकता के आधार पर निर्णय लेंगे, जो प्रायः सही रहेंगे। आप में त्याग की भावना प्रधान रहेगी, परन्तु अविश्वास की भावना भी आप में हो सकती है, साथ ही आप स्वभाव से उग्र हो सकते हैं, जिससे आपके मित्र भी आपसे नाराज़ हो सकते हैं। आपके सम्पर्क में आने वालों से आप सहानुभूति पूर्ण, निश्छल, शिष्ट व्यवहार करेंगे।

जीवन के उत्तरार्द्ध में आपकी आलस्य की प्रवृत्ति भी हो जायेगी, जिससे आपकी आज का काम कल पर टालने की प्रवृत्ति हो सकती है आप निडर रहेंगे और आप में नेतृत्व का गुण भी रहेगा। आप अच्छे भोजनाकार, कुशल प्रशासक तथा अच्छे कार्य संचालक सिद्ध होंगे, साथ ही आप कलाकारों का सम्मान करेंगे तथा आप स्वयं भी कला, नाटक, संगीत के प्रति अभिरुचि रखेंगे, किन्तु आप आत्म प्रशंसा अधिक पसन्द करेंगे, जिस कारण कोई अन्य व्यक्ति आपकी झूठी तारीफ करके आप से अनुचित लाभ भी प्राप्त कर सकता है। आपके गुप्त शत्रु अधिक होंगे, जो आपके सामने आने से दबे हुए ही रहेंगे।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा आप सम्पन्नता से जीवन बितायेंगे। आप किसी उच्च पद पर प्रतिष्ठित होंगे और प्रशासनिक अधिकारी, प्रधान, प्रबन्धक, प्रोफेसर, थानेदार या सेना में किसी उच्च पद पर कार्य करेंगे, इसके अलावा आपको व्यापार की अपेक्षा सर्विस में अधिक उन्नति के अवसर मिलेंगे।

himalayavedicworld.com

नक्षत्र – पद का विवेचन

आप उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी बृहस्पति होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण मनुष्य, योनि गो, नाड़ी मध्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ 'झ' या 'झा' अक्षर से होगा।

आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठ रहेंगे तथा समस्त परिवार जनों से यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपका कद मध्यम रहेगा एवं जीवन में सर्वदा अच्छे कार्यों को करने के लिए आप रुचिशील रहेंगे तथा प्रयत्नपूर्वक इनको सम्पन्न करेंगे। आपके इन सत्कार्यों से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको आदर प्रदान करेंगे। आपके पास पूर्ण मात्रा में धनैश्वर्य रहेगा तथा एक धनाढ्य पुरुष के रूप में आप समाज में ख्याति प्राप्त करेंगे। आपका स्वभाव अभिमानी भी रहेगा एवं अन्य जनों के समक्ष इसका आप समय–समय पर प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इससे लोगों में आपके प्रभाव के प्रति न्यूनता आएगी। आप एक यशस्वी पुरुष होंगे एवं समाज में दूर–दूर तक आपकी प्रसिद्धि रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।

यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप नाना प्रकार के सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक इनका अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक त्यागी पुरुष भी होंगे एवं समाज तथा परिवार में अवसरानुकूल अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगे। धन का आपके पास अभाव कम ही रहेगा अन्यथा इससे आप सुसम्पन्न ही रहेंगे। साथ ही विविध प्रकार के शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में भी आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा रहेगी।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।

जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप प्रवीण होंगे तथा अपने ओजस्वी तथा प्रभावी वक्तव्यों से अन्य जनों को प्रभावित करने में सर्वदा सफल रहेंगे। आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा एवं पुत्र पौत्रादि के सुख को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आपके शत्रु हमेशा भयभीत एवं पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में वे असमर्थ रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक इसका अनुपालन करने में आप तत्पर रहेंगे।

himalayavedicworld.com

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।

बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण में सम्पन्न होता है।

आप एक गौरवशाली पुरुष होंगे एवं समाज में अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यों से हमेशा सम्मानित रहेंगे। धर्म के विषय में आप का ज्ञान विस्तृत रहेगा तथा सभी लोगों को आपके प्रति हार्दिक श्रद्धा भाव रहेगा। समाज में आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा तथा साहसी प्रवृति होने के कारण शौर्यादि गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।

उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।

मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपका मस्तक विस्तृत एवं नासिका उन्नत रहेगी। साथ ही आपकी आँखें भी सुन्दर होंगी तथा शरीर के सर्वाङ्ग सुडौल, पुष्ट तथा सुन्दर रहेंगे। आपका कटि भाग पतला होगा। शिल्प विद्या में आप निपुण रहेंगे एवं इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक ख्याति एवं सफलता भी अर्जित कर सकेंगे। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में आप हमेशा सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे नित्य भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्रायः असमर्थ रहेंगे। आप कई शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे तथा एक उत्तम विद्वान के रूप में समाज में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। साथ ही संगीत शास्त्र में भी आपका हार्दिक रुझान रहेगा तथा इसका आप अच्छा ज्ञान रखेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा तथा श्रद्धा रहेगी एवं नियमपूर्वक इनका अनुपालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। सभी वर्गो में आप पूर्ण रूप से प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सम्मान एवं आदर प्राप्त होता रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय रहेगी तथा सभी लोग आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगेआप जीवन में आवश्यक सुख–संसाधनों से सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही क्रोध के भाव की आप में अल्पता रहेगी। आप राजकीय सेवा में भी नियुक्त रहेंगे तथा खान से उत्पन्न द्रव्यों से आजीविकार्जन करेंगे। साथ ही इससे पर्याप्त मात्रा में लाभार्जन भी करेंगे। स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा सम्पूर्ण सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सभी सामाजिक लोगों से अच्छा व्यवहार करेंगे एवं सबसे आपके मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नौकादि में सैर करने से भी आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आप में रहेगा एवं इसका आप प्रायः यथाशक्ति अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोऽहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।

गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।

himalayavedicworld.com

ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।

यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।

सारावली

अर्थात् मीन राशि में उत्पन्न जातक शिल्प शास्त्र में निपुण, शत्रु को पराजित करने में चतुर, शास्त्र का ज्ञाता, सुन्दर शरीर धारी, गाान विद्या का जानने वाला, धर्मात्मा, अधिक स्त्रियों में लीन, सुखभागी या मृदुवाणी युक्त, राजा का नौकर, अल्प क्रोधी, बड़े मस्तक वाला, सुखी, खान से उत्पन्न द्रव्यों को भोगने वाला, स्त्री से पराजित, सुन्दर स्वभाव वाला, समुद्री जहाज में बैठने की प्रीति रखने वाला, तथा दानी होता है।

आप जलोत्पन्न द्रव्यों या समुद्र से निकले मोती, शंख आदि रत्नोंसे पूर्ण लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति या सम्बन्धी अथवा मित्रादि की सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। नारी वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग रहेगा। आपका शरीरिक कद मध्यम रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः।

समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।

अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारूदृष्टिः।

द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् मीन राशि का जातक समुद्र के जल से गवेषित मोति, शंख आदि रत्नों और अन्य के धन का उपभोग करने वाला, स्त्री वस्त्रों में अनुरागी, मध्यम शरीर स्तर वाला, बृहद मस्तक एवं लम्बी नाम वाला, शत्रुजेता, स्त्री के वशीभूत रहने वाला, नेत्र सौन्दर्य युक्त एवं भूमिगत निधि का उपभोगी होते हुए शास्त्रज्ञ होता है।

आप पानी पीने की बार–बार इच्छा करेंगे तथा दिन में कई बार इसका प्रयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक महान विद्वान होंगे तथा कृतज्ञता के गुण से हमेशा सुशोभित रहेंगे एवं अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका पूर्ण उपकार स्वीकार करेंगे तथा हार्दिक रूप से उनका आभार भी प्रकट करेंगे। इस प्रकार आपके सद्गुणों से प्रभावित होकर सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक भाग्यशाली पुरुष होंगे तथा जीवन में आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाएंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।

विद्वान्कृतज्ञो ऽभिभवत्यऽमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोऽन्त्यराशौ।।

himalayavedicworld.com

फलदीपिका

अर्थात् मीन राशि में जन्म लेने वाला मनुष्य अधिक जल पीने वाला, सुन्दर, शरीराङ्ग वाला, अपनी स्त्री में ही सन्तुष्ट रहने वाला, जल से उत्पन्न पदार्थों द्वारा धन का उपभोग करने वाला, विद्वान, कृतज्ञ, शत्रुओं को परास्त करने वाला, सुन्दर दृष्टि युक्त एवं भाग्यवान होता है।

आप एक संयमशील पुरुष होंगे तथा इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियन्त्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे। साथ ही आप एक चालाक एवं बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को चालाकी तथा बुद्धिमानी से ही सम्पन्न करेंगे। पानी में क्रीड़ा करने से आपको अत्यन्त ही आनन्दानुभूति होगी एवं इसके लिए आप प्रायः रुचिशील रहेंगे। साथ ही आप निर्मल बुद्धि के पुरुष होंगे एवं अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही निःस्वार्थ रहेगा तथा छल–कपट का भी सर्वथा आप में अभाव रहेगा।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियों बहुगुणः कुशलो जललालसः।

विमलधीः मिल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकतिलो नरः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् मीन राशि का जातक जितेन्द्रिय, बहुत गणों से युक्त, चतुर, जलक्रीड़ाप्रिय, निर्मल बुद्धिवाला, शस्त्रचलाने में निपुण तथा दुर्बल देह से युक्त होता है।

आपका अधिकांश समय उदरपोषण सम्बन्धी कार्यों में ही व्यतीत होगा तथा यदा–कदा लाभ स्रोतों में व्यवधान आने के कारण आपको आर्थिक कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा एवं इससे आपके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। आप एक साहसी व्यक्ति होंगे एवं साहसपूर्वक अपने कार्य को सम्पन्न करेंगे। साथ ही आपका स्वभाव सन्तोष से युक्त रहेगा तथा जो कुछ भी आपके पास हो उसी पर सन्तोष करके प्रसन्नता को प्राप्त करेंगे।

जलचरधनभोग्ता मोहयुक्तोऽप्रशस्तः।

उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डल्पमध्यः।।

अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।

पितृधनजनभोगी पीड़ितो मीनराशिः।।

तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।

जातकदीपिका

अर्थात् मीन राशि का जातक जलचरों के व्यवहार से धनी, मोह युक्त, पेट पालने वाला, अप्रशस्त, स्थूलमाँस से युक्त, पत्नी युक्त स्त्रियों से पराजित, सुन्दर कान्ति वाला, पिता के धन को भोगने वाला, पीड़ित, साहसी, सन्तुष्ट एवं क्रोध युक्त होता है।

आप में गम्भीरता की प्रधानता रहेगी तथा वीरता के गुणों से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही

himalayavedicworld.com

समाज में आप एक परम आदरणीय तथा श्रद्धेय व्यक्ति माने जाएंगे एवं सब लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। कृपणता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं धन संचय में अधिक प्रवृत रहेंगे। आपकी कृपणता से कई बार अन्य लोगों को आपसे कष्टानुभूति होगी जिससे वे आपसे अप्रसन्नता प्रकट करेंगे। आप परिवार तथा कुल में सबके प्रिय रहेंगे एवं सभी परिवार जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। सेवा कार्यों में भी आपकी प्रवृति रहेगी तथा यथाशक्ति इसको पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप तीव्र गति से गमन करने वाले व्यक्ति होंगे एवं आपका चाल–चलन भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धु वर्ग में आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।

कोपनः कुपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।

नित्यसेवी शीघ्रगामी गंधर्वकुशलः शुभः।

मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

अर्थात् मीन राशि का जातक गम्भीर, वीर, चतुराई से बोलने वाला, मनुष्यों में प्रधान, क्रोधी, कंजूस, ज्ञानी, गुणवान, वंश में प्रिय, सर्वदा सेवारत, शीघ्र चलने वाला, गान विद्या में प्रवीण, शुद्ध आचरण वाला और बन्धु बान्धवों से स्नेह प्राप्त करने वाला होता है।

आप एक आकर्षक एवं सुन्दर व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उच्च कोटि के विद्वानों के लक्षणों से भी सुशोभित रहेंगे। साथ ही समाज में महिला वर्ग से आपके सम्बन्ध मधुर एवं मैत्रीपूर्ण रहेंगे।

मीनस्थे मृगलाऽछने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।

जातकपरिजातः

अर्थात् मीन राशि में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर शरीर वाला, विद्वान तथा अधिक स्त्रियों का प्रेमी होता है।

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप देवता तथा ब्राहमणों के प्रति नित्य श्रद्धावान रहेंगे तथा समयानुसार इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। आप में अभिमान का भी भाव रहेगा एवं समय–समय पर अन्य जनों के समक्ष इस भाव का आप प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आप शारीरिक रूप से भी बलवान रहेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को स्वबल से करने में भी आप निपुण रहेंगे। इससे समाज में आप आदर एवं ख्याति अर्जित करेंगे। आपका शरीर कान्तिमान रहेगा तथा अन्य कई लोगों द्वारा आपके आादेशों का पालन होगा एवं वे आपसे सुखानुभूति प्राप्त करेंगे।

देवद्विजार्याभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।

प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।

जातकाभरणम्

himalayavedicworld.com

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राहमण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

आप समाज में सर्वदा आदरणीय रहेंगे एवं धन–वैभव से सुसम्पन्न रहकर उसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी आँखें बड़ी–बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुणता प्राप्त करेंगे साथ ही इस क्षेत्र में आप विशेष सफलता तथा ख्याति भी प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

धनीमानी विशालाक्षो लक्ष्यभेदी धनुर्धरः।

गौरः पौरजन ग्राही जायते मानवे गणे।।

मानसागरी

अर्थात् मनुष्य गण का जातक धनी, सम्माननीय, बड़ी आँखों वाला, लक्ष्यभेदी तथा नगरवासियों को वश में करने वाला होता है।

गो यानि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्री वर्ग में अत्यन्त ही लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित होगा। आप उत्साही प्रवृति के पुरुष होंगे एवं अपने समस्त सांसारिक कार्यों को उत्साहपूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। वाद–विवाद में आप अत्यन्त ही चतुर होंगे तथा अपनी इस प्रवृति से अपने महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदात्साही बहुवाक्य विशारदः।

स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न संशयः।।

मानसागरी

अर्थात् गो योनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहने वाला, वाद–विवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियाँ, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5, 10, 15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टिकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, क्रय–विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो, मन में चिन्ता, शरीर में व्याकुलता, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न हो रही हो तो, ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से बृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत वस्त्र, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके साथ ही बृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएँ

himalayavedicworld.com

खत्म होंगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

मन्त्र–ऊँ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

himalayavedicworld.com

सूर्य

(सात्विक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। (30 दिन में 7000 बार)

आस्त्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मृर्त्य च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवी याति भुवना विपश्यत्।।

राशि (अंश)	मकर (04:15:20)	प्रसिद्धि
नक्षत्र (पद)	उत्तराषाढ़ (3)	शक्ति
कारक	ज्ञाति	स्वास्थ्य
बल	स्व नक्षत्र	पिता
स्थान	शत्रु राशि में	राजनीतिज्ञ

क्या है सूर्य?

कारकत्व– पिता, आत्मा, पौरुष सिद्धान्त, प्रेरणा, कार्य, अधिकार।

सूर्य शक्ति की भावना से संबंधित है। सूर्य जिस भी भाव में स्थित होता है, उस भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां तक कि सूर्य से जुड़ी राशि की विशेषताएं भी सामान्यतः तीव्र होती हैं। वह भाव जिसमें सूर्य स्थित होता है, व्यक्ति के संपूर्ण जीवनकाल के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। सूर्य व्यक्ति की कुण्डली में जिस भाव व राशि में स्थित होता है, उसकी प्रकृति के अनुसार तथा युति व दृष्टि के द्वारा अन्य ग्रहों व भावों से बने संबंधों के आधार पर व्यक्ति के प्रेरणा शक्ति को दर्शाता है, जो कि व्यक्ति आवश्यक रूप से बनने की आकांक्षा रखता है। यह सूर्य के प्रतीक (पूर्ण या परिपक्वता को प्रदर्शित करता एक चक्र, जिसमें क्षमता/संभावना को प्रदर्शित करता एक बिन्दु) में परिलक्षित होता है।

सूर्य में उपस्थित पौरुष सिद्धान्त रचनात्मकता, उन्नति, इच्छा शक्ति, उद्देश्य, अधिकार, विशिष्टता की भावना, मालिक, पिता और शासक सहित अन्य सभी अधिकारी वर्ग में संचारित होता है। जिस प्रकार एक राजा या किसी देश का शासक एक ऐसा व्यक्ति होता है, जिसके अधीन राष्ट्र के असमान सामाजिक समूह या तो एकजुट होते हैं या विभाजित होते हैं। इसी प्रकार, सूर्य एक ऐसी प्रक्रिया का प्रतीक है, जिसके द्वारा कुण्डली में उपस्थित अन्य ग्रहों की उर्जाएं एकीकृत या बर्बाद हो जाती हैं। सूर्य का सकारात्मक प्रभाव उदारता, स्नेह और रचनात्मकता है, तथा उसका नकारात्मक प्रभाव अहंकार व अक्खड़पन है।

उपाय क्या करें ?

(1) भगवान विष्णु की पूजा करें। (2) विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। (3) आदित्य हृदय स्रोत का पाठ सूर्य के सामने करें। (4) अपने आज्ञा चक्र पर (बिन्दी लगाने का स्थान) पर केसर का तिलक लगायें। (5) मांस–मदिरा से दूर रहें। (6) नमकीन परांठे रविवार को गरीबों में बांटे। (7) बन्दरों की सेवा करें (गुड़, केला, चने)। (8) मुंह में मीठा डालकर अपने काम की शुरुआत करें। (9) अपनी सामर्थ्य अनुसार गेहूं का दान करें या वजनानुसार हर महीने। (10) काले, भूरे और नीले रंग का प्रयोग करने से बचें। सफेद और पीले रंग का ज्यादा इस्तेमाल करें। (11) अपने पिता के चरण स्पर्श करें और पिता से रिश्ते बनाकर रखें। (12) 22वें साल में शादी ना करें। (13) सूर्य नमस्कार, गायत्री मंत्र का जाप करें एवं ऊँ का उच्चारण करें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है सूर्य का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। सूर्य आपके लग्न से सप्तम स्थान में मकर में स्थित है जिसका स्वामी शनि सूर्य का शत्रु है, सूर्य आपको अच्छे फल कम ही प्रदान करेगा। यह आपको स्वाभिमानी, आत्म प्रशंसा करने वाला तथा क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति बना सकता है, इसके अलावा आपके तथा आपकी पत्नी के चरित्र को भी समाज में शक की निगााह से देखा जा सकता है। आर्थिक रुप से आप सम्पन्न रहेंगे तथा आपके पास सुख–सुविधा के सभी साधन रहेंगे, किन्तु सन्तान की कमी या सन्तान के सम्बन्ध में किसी गहरी चिन्ता से आप परेशान हो सकते हैं। सप्तम का सूर्य आपको चिकित्सा के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्रदान करेगा तथा आप अच्छे डॉक्टर या वैद्य बन सकते हैं, किन्तु मानसिक परेशानियों तथा तनाव से मुक्ति मिलना कठिन होगा, इसके अलावा पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है और कुटुम्ब से भी आपका मेल कम ही हो सकता है।

आप स्वभाव से उदार तथा लोगों पर भरोसा करने वाले होंगे, इससे आप कभी–कभी धोखा भी खा सकते हैं। आपका तथा आपकी पत्नी का स्वभाव खर्चीला होने के कारण धन जमा करने में कठिनाई हो सकती है, अन्ततः आप खर्चे पर नियन्त्रण रखकर धन का संचय करने में समर्थ रहेंगे, किन्तु साझेदारी का व्यापार आपके लिये अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं होगा। इस सूर्य की सप्तम पूर्ण दृष्टि लग्न भाव पर पड़ती है और लग्न में कर्क राशि है जिसका स्वामी चन्द्र सूर्य का मित्र है यह आपके लिये अच्छा फलदायक रहेगा। आप मध्यम कद, गोरे रंग तथा स्वस्थ शरीर वाले होंगे। आपका व्यक्तित्व दिखने में कठोर पर हृदय से संवेदनशील होगा। आपका पिता से सम्बन्धों में तनाव हो सकता है तथा सत्ता पक्ष से भी आपके सम्बन्ध खराब हो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

चन्द्रमा

(सात्विक, जलीय, वैश्य)

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

राशि (अंश)	मीन (10:26:34)	जलीय स्थान
नक्षत्र (पद)	उत्तरभाद्र (3)	माता
कारक	अपत्या	हृदय
बल		मस्तिष्क
स्थान	सम राशि में	रक्त

क्या है चन्द्रमा?

कारकत्व– स्त्रीयोचित सिद्धान्त, माता, मन, भावना/सहजवृत्ति/प्रतिक्रिया।

सूर्य के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह चंद्रमा है। यह चक्रीय परिवर्तन और अन्तःप्रेरणा की भावना को व्यक्त करता है। परिवार और सामाजिक प्रतिक्रियाएं चंद्रमा से जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार वास्तविक जीवन में चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को दर्शाता है, उसी प्रकार ज्योतिषशास्त्र में चंद्रमा व्यक्ति के स्वाभाविक और भावनात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाता है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि में स्थित होता है, उसे जन्म राशि कहते हैं, जो कि सामान्यतः व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। जिस प्रकार सूर्य का संबंध क्रिया से है, उसी प्रकार चंद्रमा का संबंध प्रतिक्रिया से है। ये प्रतिक्रियात्मक भावनाएं बाल्यकाल में व्यापक रूप से अचैतन्य होती हैं, केवल तब प्रकट होती हैं, जब कोई व्यक्ति सूर्य द्वारा प्रदर्शित सच्चे आत्म के बारे में जागरूक हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप, चंद्रमा अपनी स्थित राशि व भाव तथा अन्य ग्रहों के साथ पारस्परिक संबंधों के माध्यम से एक बच्चे के रूप में व्यक्ति के भावनात्मक विकास के बारे में बता सकता है और यह बाद के जीवन में किस प्रकार उभरेगा, यह भी प्रकट कर सकता है।

चंद्रमा के माध्यम से स्त्रीयोचित सिद्धान्त– प्राकृतिक आदतों, घरेलू वातावरण, सुरक्षात्मक प्रवृत्ति, मनोदशा, कल्पना, खाने के तौर–तरीके व प्राथमिकताएं, अतीत के प्रति रवैया, सार्वजनिक व्यक्ति बनना या आम लोगों तक पहुंचने की क्षमता, चक्रिय परिवर्तन को प्रदर्शित करने वाला भाग्य, व्यक्ति में अपनेपन की भावना और महिला, विशेषकार मां का संचालन होता है। व्यापारिक चतुराई, कल्पनाशील प्रकृत्ति, माता से संबंधित अन्तःप्रेरणा व धैर्य व्यक्ति पर पड़ने वाले चंद्रमा के सकारात्मक प्रभाव हैं, जबकि हठधर्मिता, अविश्वसनीयता, तर्कहीन व्यवहार और अस्थिर/चंचल मन चंद्रमा के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपनी मां को सम्मान दें और रोजाना चरण स्पर्श करें। (2) अमावस्या को दूध और दूध से बनी वस्तुयें बांटे। (3) सोमवार को दूध, शहद से भगवान शिव का अभिषेक करें। (4) रुद्राष्टक का पाठ, ॐ नमो शिवाय का जाप, महामृत्युंजय का जाप करें। (5) सिरहाने दूध रखकर बबूल या पीपल पर डालें (रविवार को छोड़कर)। (6) चांद की रौशनी में बैठकर उं का उच्चारण करें। (7) चावल उबाल कर, दूध, चीनी मिलाकर गरीबों को खिलायें। (8) छोटे बच्चों को दूध का दान करें, खासकर मजदूर के बच्चों को। (9) वीराने में खड़े पीपल को दूध, पानी से सींचे। (10) जिन वृक्षों को कोई जल नहीं देता – सींचना शुरु करें। (11) घर के वायव्य कोण (उत्तर, पश्चिम) को खुला, हवादार रखें। (12) सफेद कपड़े में चावल बांधकर किसी शिव मंदिर में दान करें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है चन्द्रमा का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। चन्द्रमा आपके जन्म लग्न से नवम् स्थान में मीन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु से चन्द्रमा की मित्रता है। सामान्यतः नवम् स्थान का चन्द्रमा अच्छे फल देता है, चन्द्रमा आपको शुभ फल प्रदान करेगा। चन्द्रमा आपको समाज में प्रतिष्ठित बनाता है। स्वभाव से आप सौम्य रहेंगे तथा अपने व्यवहार से सबको सन्तुष्ट रखेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, किन्तु क्षीण या पापाक्रान्त चन्द्रमा कभी-कभी अस्वस्थता दे सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र होगी, पठन-पाठन का आपको शौक होगा और उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और आपका शैक्षिक रिकॉर्ड भी अच्छा रहेगा। धर्म में आपकी आस्था होगी तथा पूजा-पाठ आदि भी करेंगे। पर्यटन में आपकी बहुत रुचि होगी और पर्यटन तथा अपने व्यवसाय के लिये आप विदेश भ्रमण पर भी जा सकते हैं।

आपका भाग्योदय ऐसे व्यवसाय से सम्भव है जो भ्रमण पर आधारित हो, आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी और सर्विस के स्थान पर निजी व्यवसाय या व्यापार आपके लिये अधिक उन्नतिदायक सिद्ध होगा। लेखन, प्रकाशन, मुद्रण, सम्पादन आदि कार्यों से भी आपको यथेष्ट लाभ तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आपका भाग्योदय लगभग 24वें वर्ष में होगा और प्रवृत्ति से मितव्ययी होने से आप धन का संचय करने में भी समर्थ रहेंगे। चन्द्रमा की सप्तम् पूर्ण दृष्टि तृतीय स्थान पर कन्या राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से चन्द्रमा की मित्रता है। आप पुरुषार्थी और कार्यकुशल होंगे, आपके कार्यों में मित्रों का भी अच्छा सहयोग मिलता रहेगा और भाई-बहनों तथा माता से आपको स्नेह रहेगा, साथ ही आपको ज़मीन, मकान, वाहन आदि का सुख प्राप्त होगा।

himalayavedicworld.com

मंगल

(तामसीक, आग्नेय, क्षत्रिय)

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। (20 दिन में 10000 बार)

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत कान्ति सम प्रभम्।
कुमार भाकिृहस्तं च मंगल प्रणामाभ्यहम्।।

राशि (अंश)	धनु (04:05:31)	भाई
नक्षत्र (पद)	मूला (2)	अचल सम्पत्ति
कारक	दारा	क्रोध, हिंसा, घृणा
बल		मांसपेशी
स्थान	मित्र राशि में	बहादुरी

क्या है मंगल?

कारकत्व– युद्ध, शक्ति, आन्तरिक बल, पौरुष, महात्वाकांक्षा, दृढ़ संकल्प एवं छोटे भाई/बहन।

मंगल को सबसे शक्तिशाली ग्रह माना जाता है। यह अग्नि और उर्जा का प्रतीक है। सहज स्तर पर मंगल अस्तित्व के लिए लड़ने के दृढ़ संकल्प की भावना को दर्शाता है। जैसा कि जीवन के लिए खतरनाक परिस्थिति में व्यक्ति या तो युद्ध कर सकता है या पलायन कर सकता है। व्यक्ति केवल उसके लिए ही लड़ेगा, जिसको वह महत्व देता है। व्यक्ति किसे महत्व देता है, इसका निर्धारण बुध से होता है, अतः कुण्डली में मंगल के निहितार्थ को जानने के लिए संयुक्त रूप से बुध का भी परीक्षण करना होगा। जहां बुध व्यक्ति के महत्वपूर्ण पक्ष को दर्शाता है, वहीं मंगल यह दर्शाता है, कि कैसे व्यक्ति उसे हासिल करता है या संरक्षित करता है। परिणामस्वरूप मंगल उन सभी गुणों को दर्शाता है, जो व्यक्ति को अपने सपनों को प्राप्त करने में मदद करते हैं और इस प्रकार उसकी आत्म–छवि को बढ़ाते हैं। अतः मंगल द्वारा प्रस्तुत सबसे प्रारम्भिक गुण साहस, निडरता, पहल, शारीरिक और मानसिक आन्तरिक बल हैं।

एक योद्धा के रूप में, मंगल धातु से बनी वस्तुओं– लोहे की तलवार, ढाल, कवच, हथियार से घिरे हुए होने पर अथवा इन सभी वस्तुओं की देखभाल करने वाले व्यक्तियों पर अत्यंत प्रसन्न होता है। आधुनिक समय में इस प्रवृत्ति की व्याख्या धारदार/नुकीले धातु के उपकरणों, धातु गलाने के उद्योग, मशीनों से संबंधित लोगों अथवा इन मशीनों के साथ कार्य करने वाले लोगों जैसे इंजीनियर और तकनीशियन से की जा सकती है। मंगल के सकारात्मक प्रभाव स्वतंत्रता के प्रति प्रेम, दबे–कुचलों की रक्षा, कठोर परिश्रम करने की प्रकृति, प्रतिस्पर्द्धी स्वभाव तथा नेतृत्व की इच्छा के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं, जबकि नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति को झगड़ालु प्रवृति, संघर्ष–प्रेमी, प्रचण्ड व कलहकारी बनाता है।

उपाय क्या करें ?

(1) बड़े भाई का सम्मान करें, चरण स्पर्श करते रहें। (2) हनुमान जी को सिन्दूर को चोला चढ़ायें। (3) हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमान अष्टक का पाठ करें। (4) मंगलवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में अनार का भोग दें। (5) रक्तदान, महादान करें। (6) मीठी रोटियों का दान करें। (7) सफेद तिल और देसी शक्कर मिलाकर कीड़े मकोड़ों को डालें। (8) मंगल की होरा में (यानि मंगलवार सुबह) बन्दरों को गुड़ डालें। (9) हनुमान जी या दुर्गा जी को मंदिर में लाल रंग का झण्डा चढ़ायें। (10) सुन्दर काण्ड का पाठ हर तरह के मंगल दोष से रक्षा करता है। (11) सूर्य के सामने बजरंग बाण का पाठ करने से शत्रु नाश होगा। (12) मांस–मदिरा से दूर रहें। (13) जमीन पर सोना शुरु करें। (14) तांबे के गिलास में पानी पियें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है मंगल का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। मंगल आपके जन्म लग्न से षष्ठ स्थान में धनु राशि में स्थित है, जिसके स्वामी गुरु मंगल से मैत्री भाव रखेंगे। सामान्यतः षष्ठस्थ मंगल अच्छे फल प्रदान करता है, दो शुभ स्थानों (पंचम तथा दशम स्थान) का अधिपति होकर मंगल का शत्रु स्थान (षष्ठम) में स्थित होना आपके लिए शुभ फलप्रद नहीं होगा। मंगल आपके लिए बाल्यावस्था में कष्ट कारक हो सकता है। आप स्वभाव से गम्भीर, तथा अभिमानी हो सकते हैं और इस अहंकार के कारण आप मित्रों तथा परिजनों के स्नेह से वंचित हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बचपन में कमजोर तथा बाद में सामान्य रहेगा। बचपन में स्वास्थ्य की खराबी से आपको बहुत कष्ट झेलने पड़ सकते हैं। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी और स्वास्थ्य की खराबी से आपके शैक्षणिक जीवन में भी बाधा उत्पन्न हो सकती हैं। अपने माता-पिता से भी आपके सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे और सन्तान सुख भी आपको कम ही प्राप्त हो पायेगा, जबकि सत्ता पक्ष से आपको हानि हो सकती है। आपके शत्रु अपने कुचक्रों से आपको पीड़ित करेंगे, किन्तु अन्ततः आप उनका दमन करने में समर्थ रहेंगे।

आपकी आर्थिक स्थिति साधारण रहेगी और व्यापार से आपको लाभ प्राप्त होगा, साथ ही निजी व्यवसाय भी आपके लिए अच्छा रहेगा, किन्तु सर्विस में प्रगति तथा स्थिरता आपके लिए सम्भव नहीं है। मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु मंगल के मित्र हैं। आप में धीरे-धीरे धार्मिक भावना का विकास होगा और मध्यावस्था से आपको भाग्य का सहारा मिलेगा। मंगल की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसका स्वामी बुध मंगल का शत्रु है। आपका खर्च बढ़ सकता है और आयात-निर्यात के व्यापार में आपको लाभ कम हो सकता है। मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जो मंगल की नीच राशि है। आपके स्वभाव में अहंकार रहने से आप से मिलने वाले व्यक्तियों पर आपका अच्छा असर नहीं पडेगा, जिस कारण आप अपने अच्छे मित्रों को भी खो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

बुध

(राजसी, संसारिक, शुद्र)

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। (21 दिन में 19000 बार)

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यम् सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	मकर (21:33:24)	दत्तक पुत्र
नक्षत्र (पद)	श्रवण (4)	बुद्धिमता
कारक	भ्रात्रि	शिक्षण, शिक्षा
बल		वेद पुराण
स्थान	सम राशि में	व्यवसाय, व्यापार

क्या है बुध?

कारकत्व- व्यापार और व्यवसाय, संवाद कौशल, बुद्धिमता, मामा/मौसी।

बुध का सूचक शब्द संचार है। चूंकि बुध की कक्षीय अवधि अन्य सभी ग्रहों से सबसे छोटी है, जिससे बुध सबसे तेज ग्रह बन जाता है और इसीलिए संचार जो कि मानव जीवन की सबसे तेज गतिविधियों में से एक है, बुध उसका प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति की कुण्डली में, बुध अत्यधिक आत्म-जागरूकता का अवसर प्रदान करते हुए, प्रबुद्ध विचा की लौ कुण्डली के शेष हिस्से में संचारित करता है। विशेष रूप से बुध जिस भाव व राशि में स्थित होता है, उसके माध्यम से वह मानसिक आवृत्ति प्रकट करता है, जो व्यक्ति के विचार और सामान्य रूप से संवाद को संचालित करता है। विशेष रूप से युति/दृष्टि द्वारा स्थापित किए गए अन्य ग्रहों के साथ संपर्कों के माध्यम से, बुध सीखने के लिए व्यक्ति की उपयुक्तता को भी दर्शाता है, भले ही व्यक्ति का दृष्टिकोण या राय तर्क पर आधारित हो या उसकी भावनाओं और आदतों पर आधारित हो।

अपनी सर्वोच्च अभिव्यक्ति में, बुध बुद्धि और आत्म-ज्ञान की शक्ति का प्रतीक है तथा अपनी निम्नतर अभिव्यक्ति में, बुध चालबाज, धोखेबाज और निम्न स्तर की कुटिलता से भरे हुए मस्तिष्क का प्रतिनितिधत्व करता है। अन्य स्तरों पर, बुध बुद्धि और तार्किक उद्देश्यपूर्ण मस्तिष्क के कार्य से मेल खाता है। मानसिक धारणा के इन पहलुओं को जीवन के प्रारम्भ में ही रोपित कर दिया जाता है, अतः बुध प्रारम्भिक विद्यालयी अनुभवों का प्रतिनिधित्व करता है, जो कि बाद में विज्ञान की खोज में खिलते हैं। उसकी संवादशील योग्यता अनेक स्रोतों- व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय, परिवहन एवं छोटी या कम दूरी की यात्राओं के माध्यम से निकलती है। बुध की संवाद/संचार में गहन रूचि की अभिव्यक्ति तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श, लेखन, पठन के माध्यम से विचारों के आदान-प्रदा के द्वारा होती है। भाषाएं और संचार के साधन- टेलिफोन, टेलिविजन, कम्प्यूटर, अखबार, पुस्तकें। बुध का सकारात्मक प्रभाव व्यक्ति की चतुराई, उत्तम स्मरण शक्ति, तर्कसंगत व संवादशील मस्तिष्क द्वारा दृष्टिगोचर होता है, जबकि घबराहट, मानसिक सुस्ती, मंदता औ तर्कपूर्ण व्यंग्यात्मक प्रकृति बुध के नकारात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपनी बुआ, मौसी, बेटे से संबंध अच्छे रखें। (2) दुर्गा जी की उपासना करें, दुर्गा सप्तशती का पाठ करें, अष्टमी का व्रत रखें। (3) कन्याओं की, बेटियों की सेवा करें, अपशब्द न बोलें। (4) गरीब कन्याओं की शिक्षा और शादी में योगदान दें। (5) साबुत हरे मूंग और बाजरा (भिंगोकर) कबूतरों को डालें। (6) फिटकरी से दांत साफ करें। (7) हिजड़ों को हरे वस्त्र का दान करें। (8) पिंजरे से तोते आजाद करायें। (9) घर के उत्तर में हरा रंग करायें और दीवार घड़ी स्थापित करें। (10) अपने घर में फूलों वाले पौधे जरुर लगायें। (11) झूठ बोलने की आदत छोड़ें। (12) हरी ईलायची मुंह में डालकर रखें। (13) घर में कच्ची जमीन पर घास उगाए या पुदीना, धनिया गमले में उगाये। (14) गायों की चारा-पानी का प्रवंध करें। (15) मंदिर या धर्मस्थान में हरी सब्जियों का दान करें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है बुध का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। बुध आपके जन्म लग्न से सप्तम् स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिनके स्वामी शनि से बुध की मित्रता है। सामान्यतः सप्तमस्थ बुध शुभफल प्रदान करता है, तृतीयेश तथा द्वादशेश बुध सप्तम् स्थान में होने से आपको अच्छे फल नहीं मिलेंगे। बुध आपको धन का फिजूलखर्ची प्रवृत्ति का व्यक्ति बनाता है। आप स्वभाव से कटु हो सकते हैं, आपके मित्र आपकी उपेक्षा करेंगे तथा परिजन आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य बाल्यावस्था में कमजोर तथा बाद में मध्यम रहेगा और आपको आँखों के रोग, मस्तिष्क विकार तथा वात सम्बन्धी विभिन्न रोगों से आपको पीड़ा हो सकती है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी और आपके शैक्षणिक जीवन में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। आपकी रुचि विदेशी भाषाओं तथा साहित्य, इलेक्ट्रॉनिक्स आदि में होंगी आप पर्यटन, एन.सी.सी. आदि क्षेत्रों से भी जुड़ सकते हैं, किन्तु सफलता प्राप्ति के लिये आपको कठोर परिश्रम करना पड़ सकता है।

भाई–बहनों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे और आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आपकी पत्नी का स्वभाव आपके मनोनुकूल नहीं रहेगा आपके पत्नी के अलावा भी कहीं सम्बन्ध हो सकते हैं, जिन पर आप धन भी व्यय कर सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति साधारण रहेगी। आप लेखक, शिक्षक, सरकारी कर्मचारी या व्यवसायी भी बन सकते हैं, किन्तु खर्च की अधिकता से अर्थ संचय नहीं हो पाएगा। साझेदारी के व्यापार में विश्वास की कमी के कारण झगड़ा तथा हानि भी हो सकती है। बुध की सप्तम् पूर्ण दृष्टि प्रथम स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जिनके स्वामी चन्द्रमा से बुध की शत्रुता है। आप मध्यम कद, गेहुँए रंग तथा सामान्य शारीरिक संरचना वाले व्यक्ति होंगे। आपके हाथ छोटे तथा अंगुलियाँ मोटी होंगी, किन्तु आपके कठोर तथा रुखे स्वभाव के कारण आपके व्यक्तित्व की विशेषताएँ सामने नहीं आ पायेंगी।

himalayavedicworld.com

गुरू

(सात्विक, आग्नेय, शुभ)

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः। (19000 बार)

2

देवानां च ऋशीणां च गुरु कान्चन सन्निभम्।
बुधिभूतं त्रिलोकेश तं गुरुं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	कुम्भ (23:01:11)	गुरु
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद्र (1)	दादा–दादी
कारक	आत्म	धर्म, धार्मिक
बल	स्व नक्षत्र	विश्वास
स्थान	सम राशि में	भक्ति, सद्गुण

क्या है गुरू?

कारकत्व– शिक्षा/बुद्धिमत्ता, नैतिकता, धर्म, उन्नति, विस्तार, प्रसन्नता, स्वयं द्वारा अर्जित धन और संतान।

बृहस्पति का सूचक शब्द विस्तार है। जैसाकि यह सौर–मंडल का सबसे बड़ा ग्रह है, इसलिए ज्योतिष शास्त्र में उन्नति और विस्तार का प्रतिनिधित्व बृहस्पति द्वारा किए जाने कोई आश्चर्य नहीं है। सामान्यतः बृहस्पति जीवन के उस क्षेत्र में बहुत अनुकूल प्रतिफल प्रदान करता है, जिसका संबंध उस भाव से होता है, जिसमें बृहस्पति स्थित हो। भौतिक दृष्टि से देखा जाये, तो बृहस्पति शारीरिक विकास, विशेषकर कोशिकीय विकास और पाच के माध्यम से पालन–पोषण का प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु कुण्डली में बृहस्पति का प्रमुख महत्व उसके सामाजिक ग्रह के रूप में है, जो कि शनि के साथ वह साझा करता है। सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध और शुक्र सभी ग्रह पैतृक या पर्यावरणीय कारकों के संदर्भ के बिना विशेष रूप से व्यक्ति के चरित्र के व्यक्तिगत पहलुओं से निपटते हैं। इसके विपरीत बृहस्पति यह दर्शाता है, कि व्यक्ति अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध करने के लिए किस प्रकार जीवनभर विकास करता है।

इस संदर्भ में वृद्धि का अर्थ है कि व्यक्ति समाज में प्रचलित मान्यताओं की प्रतिक्रिया वे रूप में कैसे उन्नति करता है तथा किस हद तक इनके साथ मिश्रित होता है या उन्हें चुनौती देता है। संसार में एक स्थान प्राप्त करने की स्थिति में, बृहस्पति द्वारा अधिग्रहित राशि, भाव एवं सबसे अधिक महत्वपूर्ण अन्य ग्रहों व भावों के साथ उसके दृष्टि संबंध व्यक्ति की सामाजिक अपेक्षाओं और आदर्शों को तथा उन्हें साकार करने के अवसरों का निर्माण करने के बारे में दर्शाते हैं। अन्य स्तरों पर, बृहस्पति ईश्वर के प्रति व्यक्ति की धारणा, धार्मिक विश्वास, दर्शनशास्त्र, कानून की भावना और सभी सैद्धान्तिक विचारों को दर्शाता है। वह उच्च शिक्षा, नैतिकता, राजनीति, आध्यात्मिक व भौतिक समृद्धि, प्रतिष्ठा, सम्मान, विदेश से संबंधित कोई कार्य, अपव्ययिता, मोटापा एवं अत्यधिक भोजन/अधिक खपत को भी दर्शाता है। व्यक्ति का आशावादी, सहानुभूतिशील, दयालु और खेल प्रेमी होना बृहस्पति के सकारात्मक प्रभावों का संकेत देता है, जबकि लापरवाह, अतिआशावादी, असावधान, फिजूलखर्ची और आसक्ति उसके नकारात्मक प्रभावों को दर्शाते हैं।

उपाय क्या करें ?

(1) अपने पिता और दादा से आर्शीवाद लें। (2) बुजुर्गो की सेवा करें। (3) वृद्ध आश्रम में अन्न का दान करें। (4) दूध में हल्दी, केसर डालकर पियें। (5) मांस, मदिरा से दूर रहें। (6) बरगद के पेड़ पर हल्दी और गुड़ डालकर जल चढ़ायें, केले के पेड़ की पूजा करें। (7) अपने गुरु का साथ कभी न छोड़ें। (8) अपनी नाभि, कंठ, और माथे पर हल्दी या केसर से तिलक लगायें। (9) आधे–अधूरे कपड़े ना पहनें। (10) उत्तर–पूर्व में जल स्रोत स्थापित करें। (11) घर का मंदिर उत्तर–पूर्व में रखें। (12) गले में सोना धारण करें या पीले रंग का धागा (तिहरा) धारण करें। (13) केसर और हल्दी से दूध के साथ रुद्राभिषेक करें। (14) गरीब बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी उठायें। (15) योगा, प्राणयाम जरुर करें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है गुरू का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। गुरु आपके जन्म लग्न से अष्टम स्थान में कुम्भ राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से गुरु के सम्बन्ध सम है। सामान्यतः अष्टमस्थ गुरु अच्छे फल नहीं देता है। षष्ठेश तथा नवमेश गुरु अष्टम स्थान में आपको अशुभ फल प्रदान करेगा। गुरु आपके प्रत्येक कार्य में बाधा तथा विलम्ब उत्पन्न कर सकता है। आपका स्वभाव से रुखे एवं कठोर हो सकते हैं तथा आप में हिंसक भावनायें भी हो सकती हैं। आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है और इन मित्रों में से कुछ लोग आपके गुप्त शत्रु भी सिद्ध हो सकते हैं। आपका स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है और आपको आँखों के रोग, संग्रहणी, बवासीर तथा गुप्त रोगों से कष्ट हो सकता है, इसके अलावा आपको ज़हर का खतरा भी हो सकता है। आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी और इतिहास, पुरातत्व, विधि, साहित्य, दर्शन शास्त्र आदि विषयों की ओर आपका रुझान होगा।

आपकी रुचि ज्योतिष, प्राचीन भारतीय साहित्य, गूढ़ विषयों आदि के अध्ययन में होगी, किन्तु शैक्षणिक जीवन में आपको बाधा या असफलता का सामना भी करना पड़ सकता है। पर्यटन का भी आपको शौक रहेगा। आपको शत्रुओं के कुचक्रों से हानि हो सकती है और गुप्त शत्रु आपको अधिक क्षति पहुँचा सकते हैं। आपकी आस्था धर्म में अधिक नहीं रहेगी तथा रुढ़िवाद एवं कर्मकाण्डों के तो आप सख्त विरोधी होंगे आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा। आपको सन्तान सुख प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। आप साहित्यकार, शिक्षक, इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता, विधिवेत्ता आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव तथा हानि भी हो सकती है और आपके खर्चीले स्वभाव के कारण आप अर्थ संचय करने में विफल हो सकते हैं। गुरु की पंचम पूर्ण दृष्टि द्वादश स्थान में मिथुन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी बुध से गुरु की शत्रुता है। आपका खर्च बढ़ सकता है तथा आयात-निर्यात के व्यापार में आपको हानि हो सकती है। गुरु की सप्तम पूर्ण दृष्टि द्वितीय स्थान में सिंह राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी सूर्य से गुरु की मित्रता है। आप अपने परिश्रम से धन की प्राप्ति में समर्थ रहेंगे और अपने कुटुम्बियों के साथ आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। गुरु अपनी नवम पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ स्थान में तुला राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से गुरु की शत्रुता है। अपनी माता के साथ आपके मतभेद रह सकते हैं और आपको भूमि, भवन, वाहन आदि सुख-सुविधायें प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

himalayavedicworld.com

शुक्र

(राजसी, वायुमय, ब्राह्मण)

ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः। (6000 बार)

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्व भास्त्र प्रवक्तारं भर्गव प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	मकर (21:48:04)	विवाह, पत्नी
नक्षत्र (पद)	श्रवण (4)	यौन–इच्छा
कारक	अमात्य	इत्र, सुगंध, फूल
बल		संगीत, नृत्य, नाटक
स्थान	मित्र राशि में	विलासितापूर्ण वस्तुएँ

क्या है शुक्र?

कारकत्व– कला, सुख–सुविधा, बिना अपने परिश्रम के आसानी से प्राप्त धन, प्रेम, स्नेह, सौन्दर्य और यौन संबंध।

पारम्परिक रूप से शुक्र जीवन में सौहार्द, स्नेह और संबंधों की आवश्यकता को दर्शाता है। हालांकि, अधिक मौलिक स्तर पर, शुक्र का संबंध व्यक्ति को आकर्षित और घृणित करने वाली वस्तुओं से तथा इन प्रभावों के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया से है। तुलना करना इसमें शामिल एक प्रक्रिया है, जो यह निर्णय करने का प्रयास करती है, कि व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं के अनुसार क्या अच्छा या बुरा है। कभी–कभी, यह सहकारिता और साझाा करने के व्यवहार के परिणामस्वरूप होता है, क्योंकि अधिकांश लोग अकेला या अलोकप्रिय होने के बजाय दूसरों के साथ बंधे रहना पसन्द करते हैं। प्रेम के संदर्भ में, शुक्र प्रेम के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया को प्रकट करता है, जब उसे प्रेम की प्राप्ति होती है, बजाय इसके कि व्यक्ति स्वयं के प्रति प्रेम को भावनात्मक रूप से कैसे अभिव्यक्त करे। भावनात्मक अभिव्यक्ति का कार्य मंगल का है।

इस बात का ध्यान रखें कि शुक्र शायद ही कभी मुत में, बदले में बिना कोई उम्मीद किए कुछ देता है। इसलिए सौहार्दपूर्ण रिश्तों को आकर्षित करने की व्यक्ति की क्षमता शुक्र द्वारा अधिग्रहित राशि और भाव पर निर्भर करता है और विशेष रूप से शुक्र दृष्टि के माध्यम से जिन ग्रहों से संपर्क बनाता है उनसे। अन्य स्तरों पर, शुक्र के संविभाग के अन्तर्गत शारीरिक आकर्षण या प्रतिकर्षण के अतिरिक्त, सौन्दर्य, कला, सभी प्रकार के करीबी संबंध, आधुनिकता, स्वाद, रुचि, फैशन, स्त्री एवं स्त्रीयोचित कामुकता, शारीरिक कुशलता, कुटनीति, घमंड, मुद्रा विनिमय के सभी साधन एवं आसानी से प्राप्त धन शामिल हैं। व्यक्ति का मित्रवत व्यहार, कलात्मकता, उत्तम आचरण तथा स्नेहशील प्रकृति शुक्र के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि स्वार्थपूर्ण एवं अनुचित रूप से अत्यधिक रोमांटिक होना शुक्र के

उपाय क्या करें ?

(1) पत्नी का सम्मान करें, नारी जाति को सम्मान दें। (2) अपने शरीर की साफ–सफाई का ध्यान रखें – साफ–सुथरे कपड़े पहनें। (3) इत्र का प्रयोग करें। (4) गाय के दूध की खीर बनाकर लक्ष्मी जी को भोग लगायें और प्रसाद के रुप में बांटे (शुक्रवार को)। (5) श्री सूक्तम जी, कनकधारा स्रोत का पाठ करें। (6) संध्या समय गाय के देसी घी की ज्योति जलायें। (7) अपने घर के दक्षिण–पूर्व में गुलाबी रंग के पर्दे लगायें या पेंट करवायें। (8) दक्षिण–पूर्व में संध्या समय देसी घी की ज्योत जलायें। (9) गरीब कन्याओं की शादी में श्रृंगार का सामान दान करें। (10) अपने घर में केवड़ा, गुलाबजल का छिड़काव करें, गुलाब की पंखुड़ियां मंदिर में चढ़ायें। (11) मंदिर में रुई की बत्तीयां, मिट्टी के दीपक और देसी घी का दान करें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है शुक्र का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। शुक्र आपके जन्म लग्न से सप्तम स्थान में मकर राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शनि से शुक्र की मित्रता है। सामान्यतः सप्तमस्थ शुक्र अच्छे फल प्रदान करता है। चतुर्थेश तथा एकादशेश शुक्र सप्तम स्थान में आपके लिए शुभ फलप्रद रहेगा। शुक्र आपको सम्पन्न, उदार, दीर्घायु, सुशील, सदाचारी तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाता है। आपका स्वभाव मिलनसार रहेगा तथा आप मित्र बनाने में प्रवीण होंगे। आपके मित्रों और परिजनों से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। आपके मित्र आपके हितेषी तथा संकट में आपकी मदद करने वाले सिद्ध होंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, किन्तु कभी-कभी आपको वात-विकार रोगों से कष्ट हो सकता है। आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, चिकित्सा, इतिहास, पुरातत्व, विधि, संगीत, रसायन आदि विषयों में रहेगा, इसके अलावा ज्योतिष, नाटक, सिनेमा, अभिनय आदि क्षेत्रों में भी आपकी रुचि रहेगी। पर्यटन में आपका विशेष अनुराग रहेगा। अपनी माता से आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। आपकी पत्नी सामान्य रूप रंग, मध्यम कद तथा गोल चेहरे की स्त्री होंगी। वह प्रभावी, कार्यकुशल, विपत्ति में स्थिर तथा शान्त रह कर स्थिति को सम्भालने वाली स्त्री होंगी। यह शुक्र उनके गुणों का पूर्ण विकास करेगा। आपके साथ उनके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। अपनी पत्नी के साथ आपका प्रेम तथा सामंजस्य बना रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी और आप लेखक, साहित्यकार, चिकित्सक, पुरातत्ववेत्ता, संगीतकार, विधिवेत्ता, निर्देशक, अभिनेता आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, साथ ही आपको व्यापार में रुचि रहेगी तथा इसमें आपको काफी लाभ भी होगा। ज़मीन, मकान एवं वाहन आदि का सुख भी आपको प्राप्त होगा। शुक्र की सप्तम पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से शुक्र की शत्रुता है। आप मध्यम कद, गोरे रंग तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। आपका स्वभाव मिलनसार तथा व्यक्तित्व आकर्षक होगा और आप अपरिचित स्थानों में भी लोगों से मित्रता स्थापित कर लेने में भी सफल रहेंगे।

himalayavedicworld.com

शनि (वक्री)

(तामसी, वायुमय, चंडाल)

ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः। (23000 बार)

नीलांजन समाभासं रवि पुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

राशि (अंश)	मिथुन (20:55:44)	**धैर्य**
नक्षत्र (पद)	पुनर्वसु (1)	**मृत्यु, बुढ़ापा**
कारक	मात्रि	**पाप, आलस्य**
बल		**मुसीबत, गरीबी**
स्थान	मित्र राशि में	**नौकर, दासता, गुलामी**

क्या है शनि?

कारकत्व- भय, दुख, बुढ़ापा, प्रतिबंध, अवसाद।

बृहस्पति के विस्तारवादी प्रकृति को संतुलन करने के लिए, शनि का ज्योतिषीय कार्य प्रतिबंधित करना है। सीमा और कठिनाई शनि के प्रमुख गुण हैं। एक व्यक्ति सदैव शनि द्वारा अधिग्रहित भाव के अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत गतिविधियों में सीमा व बंधनों का सामना करता है। यह प्रायः कष्टप्रद होता है, किन्तु व्यक्ति के विकास के लिए कोई भी भाग कम महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि शनि बृहस्पति के प्रबंधनीय सीमाओं के भीतर ही आगे बढ़ने का आग्रह करता है।

कुण्डली में शनि की स्थिति दर्शाती है, कि व्यक्ति समाज में कहां और कैसे अपनी पहचान बनाना चाहता है। शनि का अन्य ग्रहों और भाव के साथ स्थापित दृष्टि संबंध व्यक्ति के रास्ते में आने वाली बाधाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। ये आत्म-प्रवृत्त हो सकते हैं अथवा उन घटनाओं के बारे में हो सकते हैं, जो व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर प्रतीत होते हैं। दोनों ही स्थितियों में, शनि सीखाता है कि वास्तविकता के साथ कठोर टकराव के माध्यम से तथा परिस्थितियों को सीमित करने के माध्यम से, व्यक्ति को अपनी महात्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने से पहले अपने आप में क्या परिवर्तन करना चाहिए। चूंकि कुछ ही लोग बाधा, विलम्ब या कठिनाइयों को गरिमापूर्ण ढंग से स्वीकार करते हैं, इसलिए शनि को दुख व उदासी से भरे हुए दर्दनाक और यातनापूर्ण अनुभवों का कारण माना जाता है।

अपने सबसे रचनात्मक रूप में, शनि कठोर परिश्रम, आत्म-अनुशासन, धैर्य और परम्परा के गुणों की एक सच्ची समझ से पैदा हुए ज्ञान को प्रदान करता है। क्योंकि शनि व्यक्ति की दृढ़ता, लगन या सफलता का परीक्षण करता है, इसलिए वह दृढ़ता व धैर्य के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ा होता है। किन्तु यदि शनि की उर्जा को उपेक्षित कर दिया जाए अथवा वह बहुत अधिक हावी हो जाए, तो व्यक्ति के आत्म-विश्वास को बाधित करके और उसके उद्दश्यों को विफल करके, यह दमनकारी भी हो सकता है। फिर वह कठिनाई, धीमापन, जड़ता और तनाव को जन्म देता है। शनि के नियम सभी नियमों और विनियमों, ब्रह्माण्ड के भौतिक नियमों, सरकार और सभी अधिकारी वर्ग, परिक्षाओं और शिक्षकों, आर्थिक मंदी, दर्शनशास्त्र, समय, अवसाद, अकेलापन, भय और उम्र बढ़ने की प्रकिया के बीच अन्य चीजों तक फैला हुआ है। शनि का सकारात्मक पक्ष या लगन, अनुशासन और विश्वसनीयता

उपाय क्या करें ?

(1) अपने अधीनस्थ कर्मचारियों का सम्मान करें। (2) कौओं को खीर, दही, रोटी देते रहें। (3) अमावस्या को खीर बनाकर बांटें। (4) पीपल विशेषतया जो वीराने में पाये जाते हैं – उन्हे अमावस्या, संक्रान्ति और पूर्णिमा पर दूध और जल से सींचें। (5) मजदूरों के बच्चों को दूध पिलायें। (6) गरीबों को जूते का दान करें। (7) मां काली, भैरो जी और शनिदेव की उपासना करें। (8) हनुमान जी को शनिवार को सिन्दूर का चोला चढ़ायें। (9) उड़द की दाल, बैंगन आलू की सब्जी और रोटी गरीबों को बांटे। (10) काले गुलाब जामुन का दान शनिदेव के मंदिर के बाहर करें। (11) काले तिल, सूखा नारियल और शक्कर मिलाकर कीड़े-मकौड़ों को लगातार डालें। (12) पैरों की मालिश करते रहें। (13) घर में कबाड़, कचड़ा, रद्दी, पुराने कपड़े इकठ्ठे न होने दें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है शनि का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। शनि आपके जन्म लग्न से द्वादश स्थान में मिथुन राशि में स्थित है, जिसके स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। सामान्यतः द्वादशस्थ शनि अशुभ फल देता है। सप्तमेश तथा अष्टमेश शनि द्वादश स्थान में आपके लिए अनिष्टकारक रहेगा। शनि आपके प्रत्येक कार्य में विलम्ब अथवा बाधा उपस्थित कर सकता है। आप तेज़ स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं और आपके कटु व्यवहार से परिजन भी आप से असन्तुष्ट हो सकते हैं। मित्रों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे और आपके मित्र आपकी सहायता करने के स्थान पर आपके लिये कठिनाइयाँ उपस्थित कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आपको आँखों के रोग, ज़ुकाम तथा वात रोगों का खतरा हो सकता है, इसके अतिरिक्त विषपान तथा चोर से भी खतरा हो सकता है और बाल्यावस्था में आपको जल, सर्प तथा विष से खतरा हो सकता है।

आपकी बुद्धि मध्यम रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, अर्थशास्त्र, दर्शन, पुरातत्व, भाषा, विधि आदि में रहेगा, इसके अतिरिक्त गूढ़ विषयों के अध्ययन-अनुसन्धान में आपकी रुचि होगी। आपके अध्ययन काल में बाधाएँ आ सकती हैं किन्तु अपने परिश्रम से आप सफलता प्राप्त करेंगे। पर्यटन में भी आपकी रुचि रहेगी। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहेगा। आपकी पत्नी तेज़ स्वभाव की स्त्री हो सकती है, साथ ही वह लोभी तथा खर्चीली प्रवृत्ति की स्त्री हो सकती हैं और आपके साथ उनके वैचारिक मतभेद रह सकते हैं, जिस कारण आपके लिये घर में सद्भाव तथा सामंजस्य स्थापित करना कठिन हो सकता है। आपका आयु पक्ष मध्यम रहेगा। आपको कभी-कभी आकस्मिक हानि भी हो सकती है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी।

आप शिक्षक, लेखक, साहित्यकार, भाषाविद्, पुरातत्ववेत्ता, विधि-विशेषज्ञ आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में आपको उतार-चढ़ाव की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथापि वस्त्र व्यापार से आपको लाभ होगा, किन्तु आपके खर्चीले स्वभाव के कारण अर्थ संचय करने में आपको बाधा आ सकती है। शनि अपनी तृतीय पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान में सिंह राशि को देखता है, जिसके स्वामी सूर्य से शनि की शत्रुता है। आपको अर्थ संचय करने में विलम्ब या बाधाएँ हो सकती हैं। कुटुम्बियों से आपके सम्बन्ध खराब हो सकते हैं। शनि की सप्तम पूर्ण दृष्टि षष्ठ स्थान में धनु राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट हो सकते हैं तथा शत्रुओं के कुचक्रों से आपको आर्थिक हानि हो सकती है। शनि की दशम पूर्ण दृष्टि नवम स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से शनि के सम्बन्ध सम हैं। आपकी धर्म में आस्था कम हो सकती है और आपका भाग्य उदय होने में विलम्ब हो सकता है।

himalayavedicworld.com

राहु

(ड्रैगन का सिर, शीर्ष, आरोही नोड)

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। (40 दिन में 18000 बार)

अर्थकायं महावीर्य चंद्रादित्य चिमर्दनम्।
सिंहिकाग र्भसंभूतं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

राशि (अंश)	वृश्चिक (14:09:24)	बुरी आदतें
नक्षत्र (पद)	अनुराधा (4)	विधवा
कारक		अनैतिक संबंध
बल	नीच राशि	झूठ
स्थान	शत्रु राशि में	अनुसंधान

क्या है राहु?

कारकत्व– संरक्षण, सामाजिक स्थिति, सफलता और दादा।

पहले से छठी राशि में स्थित राहु उत्तम फल प्रदान करता है। जीवन में प्रसन्नता और शक्तिशाली स्थिति के लिए राहु केन्द्र और त्रिकोण भाव में बहुत उत्तम होता है।

उपाय क्या करें ?

(1) मां सरस्वती की उपासना करें। (2) ससुराल में रिश्ते बनाकर रखें। चोटी के स्थान पर कुछ बाल कभी न कटवायें। (3) किसी गरीब कन्या का कन्यादान करें और उनकी शादी में यथासंभव मदद करें। (4) तम्बाकू, सिगरेट कभी न छुयें। (5) मछली कभी न खायें। (6) संध्या समय कभी शराब न पीयें। (7) भगवान शिव पर गन्ने के रस का अभिषेक करें। (8) भगवान शिव पर चंदन के पाउडर से लेप करें, चन्दन का इत्र लगायें। (9) पंचमी का व्रत करें, नागों की पूजा करें। (10) मछलियों को जौ के आटे की गोलियां डालें। (11) पवित्र सरोवर या नदी में स्नान करते रहें। (12) चांदी के गिलास में दूध पियें। (13) पक्षियों को दूध में जौ भिगोकर सुबह डालें। (14) वजन के बराबर अनाज गरीबों में बांटें। (15) हाथी को गन्ना खिलायें।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है राहु का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। राहु आपके जन्म लग्न से पँचम् स्थान में वृश्चिक राशि में स्थित है, जिसके स्वामी मंगल से राहु की शत्रुता है। सामान्यतः पँचमस्थ राहु अच्छे फल नहीं देता है, पँचम् स्थान में वृश्चिक राशि का राहु आपको मिश्रित फल देगा। राहु आपको स्वाभिमानी तथा विवेकशील व्यक्ति बनाता है। आप तेज़ स्वभाव के व्यक्ति हो सकते हैं, किन्तु आप व्यवहारकुशल होंगे तथा अपनी मनोभावना को प्रकट नहीं होने देंगे। नेतृत्व का गुण होने से आप समाज सेवा के कार्यों के लिए भी तत्पर रहेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी और मित्रों एवं परिजनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपका स्वास्थ्य अधिक नहीं अच्छा नहीं होगा पेट सम्बन्धी रोग, अपच तथा वात रोग से आपको कष्ट हो सकता है। आपको हृदय रोग का खतरा भी हो सकता है।

आपकी बुद्धि अच्छी रहेगी और शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान विज्ञान वर्ग के विषयों की ओर रहेगा और इसके अतिरिक्त गणित, विधि, भाषा, पुरातत्व आदि विषयों में भी आपकी रुचि रहेगी साथ ही ज्योतिष, तंत्र-मंत्र आदि विषयों के अध्ययन में भी आपकी रुचि होगी। आप पर्यटन प्रेमी रहेंगे तथा आपका प्रवास का योग भी है और आपके अध्ययन काल में कुछ बाधाएँ आ सकती हैं किन्तु साहस तथा परिश्रम से आप संकटों को दूर करके सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपके सन्तान सुख में विलम्ब या सन्तान को कष्ट भी सम्भव है। आपकी आर्थिक स्थिति औसत रहेगी और आप गणितज्ञ, वकील, पुरातत्ववेत्ता, वैज्ञानिक, शिक्षक, लेखक आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, किन्तु व्यापार में आपको अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पायेगा, साथ ही राजनीति के क्षेत्र में विशेष लाभ की सम्भावना नहीं रहेगी।

राहु की पँचम् पूर्ण दृष्टि नवम् स्थान में मीन राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी गुरु से राहु के सम्बन्ध सम हैं। धर्म में आपकी आस्था कम हो सकती है तथा 46वें वर्ष में आपका भाग्य उदय होना सम्भव है। राहु अपनी सप्तम् पूर्ण दृष्टि से एकादश स्थान में वृष राशि को देखता है, जिसके स्वामी शुक्र से राहु के सम्बन्ध मित्रतापूर्ण हैं। आपकी आमदनी में वृद्धि होगी और आपको व्यापार से उन्नति के अवसर भी प्राप्त होंगे। राहु की नवम् पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान में कर्क राशि में पड़ती है, जिसके स्वामी चन्द्रमा से राहु की शत्रुता है। आप मध्यम कद के, गेहुँए रंग तथा सामान्य शारीरिक गठन वाले व्यक्ति होंगे। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा तथा अपनी व्यवहारकुशलता से समाज में लोकप्रिय रहेंगे।

himalayavedicworld.com

केतु

(ड्रैगन की पूंछ, पार्श्वभाग/पूछांग, अवरोही नोड)

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। (40 दिन में 17000 बार)

केतु कृणवन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुशद्भिरु जायथाः।।

राशि (अंश)	वृष (14:09:24)	मोक्ष
नक्षत्र (पद)	रोहिणी (2)	दासता
कारक		षड़यंत्र
बल	नीच राशि	दण्ड, कारावास
स्थान	शत्रु राशि में	बुरी आत्मा

क्या है केतु?

कारकत्व– आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव, अनासक्ति

केतु सातवीं से बारहवीं राशि में उत्तम फल प्रदान करता है। कुण्डली में सुव्यवस्थित केतु अपने वरिष्ठों का विश्वास हासिल करने तथा विदेश से लाभ प्राप्ति का सूचक है। जबकि पीड़ित केतु अकथनीय चिन्ताओं व परेशानियों का कारक है।

उपाय क्या करें ?

(1) गणेश जी की उपासना करें। (2) हर बुधवार को दूर्वा और लड्डू का भोग लगायें। (3) कुत्तों की सेवा करें। (4) सफेद तिल और शक्कर को सूर्योदय से पहले जीव–जन्तुओं के लिए दान करें। (5) बिस्तर पर कभी भी काली, नीली चादर न बिछायें। (6) गले में धागे, ताबीज, गण्डे धारण न करें। (7) दूध और केसर का सेवन करें। (8) धर्मस्थान पर झण्डा दान करें। (9) किसी गरीब कन्या की शादी में पलंग का दान करें। (10) वृद्धाश्रम में मीठा बांटें। (11) गुप्त दान करते रहें। (12) खट्टी–मीठी गोलियां बांटे।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में क्या है केतु का फल?

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है। केतु आपके जन्म लग्न से एकादश स्थान में वृष राशि में स्थित है, जिसके स्वामी शुक्र से केतु की मित्रता है। सामान्यतः लाभ स्थान में केतु अच्छे फल प्रदान करता है, एकादश स्थान में वृष राशि का केतु आपको शुभ फल प्रदान करेगा। केतु आपको विद्वान, भाग्यवान, विनोदी, तेजस्वी, सम्पन्न तथा सुखी व्यक्ति बनाता है। आप मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे और आपकी भाषा में मधुरता रहेगी। आपके मित्र अधिक रहेंगे, किन्तु उनमें से विश्वसनीय तथा सहायक मित्र कम ही होंगे। समाजसेवा तथा सार्वजनिक कार्यों में आपकी रुचि रहने से समाज में आपकी प्रतिष्ठा होगी, जिससे आपके कार्य सरलता से पूर्ण होंगे। मित्रों तथा परिजनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, किन्तु कभी-कभी गुदा या पाचन संस्थान सम्बन्धी बीमारियों से आपको कष्ट हो सकता है।

आपकी बुद्धि तीव्र रहेगी तथा शैक्षणिक जीवन में आपका रुझान साहित्य, कला, विधि, भाषा, रसायन, चिकित्सा आदि विषयों में रहेगा साथ ही संगीत, काव्य आदि विद्याओं में आपकी रुचि रहेगी। आपको पर्यटन का भी शौक रहेगा, आपका विदेश यात्रा का योग भी है आप प्रवास भी कर सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी और आप लेखक, प्राध्यापक, कलाकार, भाषाविद्, वकील, बैंक, बीमा अधिकारी, न्यायाधीश, चिकित्सक, रसायन शास्त्री आदि बनकर धन अर्जित करेंगे, साथ ही व्यापार में आपको पर्याप्त लाभ की प्राप्ति होगी। अपनी मधुरभाषा से जनता को प्रभावित करने में सफल रहेंगे, जिससे आप राजनीति में सफल होकर शासन में उच्च पद पर आसीन होंगे।

केतु अपनी पंचम् पूर्ण दृष्टि से तृतीय स्थान में कन्या राशि को देखता है, जिसके स्वामी बुध से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आप साहसी तथा परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध सामान्य रहेंगे। केतु की सप्तम् पूर्ण दृष्टि पंचम् स्थान में वृश्चिक राशि पर पड़ती है, जिसके स्वामी मंगल से केतु की मित्रता है। आपका बौद्धिक स्तर उत्तम रहेगा, किन्तु आपको सन्तान की ओर से प्राप्त होने वाले सुख में कठिनाई हो सकती है या आपकी सन्तान को कोई कष्ट हो सकता है। केतु अपनी नवम् पूर्ण दृष्टि सप्तम् स्थान में मकर राशि को देखता है, जिसके स्वामी शनि से केतु के सम्बन्ध सम हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा। आपकी पत्नी मध्यम कद की, गेहुँए रंग तथा साधारण शारीरिक गठन वाली महिला होंगी, उनका स्वभाव तेज़ रह सकता है, तथापि अपनी व्यवहारकुशलता तथा धैर्य से आप सद्भाव तथा सामंजस्य बनाये रखने में सफल रहेंगे।

himalayavedicworld.com

वाह्य व्यक्तित्व

वैदिक ज्योतिष में आपका नक्षत्र, लग्न और लग्न स्वामी एक दिव्य मानचित्र बनाते हैं, जो आपके बाहरी व्यक्तित्व के बारे में हमारी समझ का मार्गदर्शन करता है। ये दिव्य संकेत न केवल आपके मार्ग को रोशन करते हैं बल्कि उन मूल विशेषताओं को भी दर्शाते हैं जो दुनिया के साथ आपकी पारस्परिक क्रिया को आकार देते हैं। प्राचीन ज्ञान पर आधारित इस भविष्यवाणी का उद्देश्य व्यावहारिक रहस्योद्घाटन करना और आपकी आत्म–जागरूकता को बढ़ाना, आपके जीवन की यात्रा को गहन तरीकों से समृद्ध करना है।

उत्तरभाद्र (3) अधिपति –

आपकी जन्मकुण्डली में जन्म नक्षत्र उत्तर भाद्रपद है, आप आकर्षक शरीर तथा चुम्बकीय व्यक्तित्व वाले व्यक्ति होंगे।

लग्न – कर्क

आपका जन्म कर्क लग्न में हुआ है, आप मध्यम कद वाले तथा हल्के भूरे बालो वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी ललाट चीकनी एवं चमकदार होंगी। आपकी आंखे हल्के रंग की होगी तथा चेहरा गोल हो सकता है। आपकी त्वचा सूर्य की गर्मी से प्रभावित होने वाली होगी तथा आपकी शारीरिक बनावट कमजोर हो सकती है। आप अपने पहनावे में लापरवाह हो सकते हैं तथा आप पीले वर्ण के हो सकते हैं। आपकी हड्डियां लंबी एवं मजबूत होंगी। आपकी आंखें बड़ी हो सकती हैं तथा आपकी कमर मोटी होगी। आप चलते समय थोड़े रुक–रुककर चल सकते हैं।

लग्नेश – चन्द्रमा, नक्षत्र–उत्तरभाद्र

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा लग्नाधिपति है, आप दुबले–पतले लेकिन आकर्षक व्यक्तित्व वाले एवं सुंदर आकृति के व्यक्ति होंगे। आपकी आंखें चमकीली तथा बाल पतले एवं घुंघराले हो सकते हैं। आपकी वाणी में मिठास होगा, आपके अंग सुडौल होंगे तथा आप गौर वर्ण के होंगे।

himalayavedicworld.com

आंतरिक व्यक्तित्व

आपके वैदिक कुण्डली में आपके लग्न, लग्नेष और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति आपके आंतरिक व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करती है। ये मानसिक प्रवृत्तियों, संभावित चुनौतियों और सफलता के क्षेत्रों का संकेत देते हैं। इन पर चिंतन करने से आपके निर्णयों को निर्देशित करने और जीवन की जटिलताओं से निपटने में मदद मिल सकती है, यह आपके भाग्य को आकार देने की आपकी स्वतंत्र इच्छा एवं शक्ति को ध्यान में रखता है।

लग्न – कर्क

सकारात्मक : आप स्वतंत्र विचार वाले, पूर्णतया ईमानदार, सच्चाई पसंद करने वाले, दृढ़निश्चयी, लचीले स्वभाव वाले, दूसरों का ध्यान रखने वाले व्यक्ति होंगे। इसके साथ ही आप रक्षात्मक, बहुत सोच-विचार करने वाले, अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने वाले तथा सत्ता एवं अधिकार का अच्छी तरह उपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे।

नकारात्मक : आप अधिकार जताने वाले, लापरवाह, मौज-मस्ती के स्वभाव वाले एवं जल्दवाज व्यक्ति हो सकते हैं।

लग्नेश – चन्द्रमा, नक्षत्र–उत्तरभाद्र

सकारात्मक : आप रचनात्मक, शांत, मित्रवत व्यवहार करने वाले, सौम्य एवं मधुर वाणी बोलने वाले व्यक्ति होंगे। इसके साथ ही आप दानवीर, सही रास्ते पर चलने वाले, सबके प्यारे, मददगार, सच्चाई पसंद करने वाले एवं भगवान से डरने वाले होंगे।

नकारात्मक : आप हिचकिचाने वाले एवं बहुत ज्यादा भावुक हो सकते हैं।

आंतरिक व्यक्तित्व के मुख्य बिन्दु

(1) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 9 में स्थित है। आप विनीत, ईमानदार, साफ--साफ बोलने वाले, उत्तम व्यवहार करने वाले तथा अपने से बड़ों का आदर करने वाले व्यक्ति होंगे।

(2) बुध आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आप बहस करने में बहुत तेज होंगे। आपको झगड़ा करने में आनंद की प्राप्ति हो सकती है।

(3) शनि आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप थोड़े कमजोर आशिक हो सकते हैं तथा आपको औरतों का सम्मान करने वाला बनना पड़ेगा।

(4) बुध आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आप ईर्ष्यालु, शंकालु एवं समाज के नियमों को ना मानने वाले व्यक्ति हो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

स्वास्थ्य अवलोकन

आपका स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो आपके जीवन की यात्रा का समर्थन करता है, और वैदिक ज्योतिष के माध्यम से, विशेष रूप से आपके लग्न और नक्षत्रों के अध्ययन से, हम आपके स्वास्थ्य संबंधी प्रवृत्तियों की गहन समझ प्राप्त कर सकते हैं। ये भविष्यवाणियाँ संभावित स्वास्थ्य–संबंधी मुद्दों और आपके स्वास्थ्य को बनाए रखने या सुधारने के तरीकों के बारे में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। यह जानकर कि आगे क्या होने वाला है, आप आवश्यक परिवर्तन करने, निवारक उपाय करने और स्वस्थ आदतें स्थापित करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार रह सकते हैं। इसलिए, ये स्वास्थ्य भविष्यवाणियाँ एक रोडमैप के रूप में काम करती हैं, जो आपको अधिक संतुलित, सक्रिय और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं।

उत्तरभाद्र (3) अधिपति – शनि

उत्तरा भाद्रपद से संबंधित शारीरिक अंग पिंडली है।

लग्न – कर्क

कर्क लग्न का संबंध मानव शरीर के छाती, सीना, उदर का ऊपरी भाग, पेट, पाचन तंत्र, गर्भाशय तथा निचली पसलियों से होता है।

हालांकि बचपन में आपका स्वास्थ्य बढ़िया होगा, लेकिन बाद में आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। आपकी आयु लंबी होगी तथा आप किसी बड़ी बीमारी से ग्रसित नहीं होंगे।

himalayavedicworld.com

अच्छे स्वास्थ्य के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य के जीवन में सुख-दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस-पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ-साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

(1) खुले आकाश में सूर्य को साक्षी मानते हुए हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, हनुमानष्टक का पाठ करने से दुर्घटना का भय खत्म होता है।

(2) सूर्य के सामने गायत्री मंत्र या अपने धर्म के अनुसार मूल मंत्र का जाप करने से आयु में वृद्धि होती है - रोगों से छुटकारा मिलता है।

(3) हर अमावस्या, संक्रान्ति या पूर्णिमा को गरीबों को अन्न का दान करें या खाना खिलायें।

(4) अनाथालय, कोढ़ी आश्रम, अंधविद्यालय और पशुओं के अस्पताल में दवाईयों का दान करें।

(5) सिक्के सिरहाने रखकर सुबह गरीबों को बांटें।

(6) कभी भी उत्तर की तरफ सिर और पूर्व की तरफ पैर करके न सोयें।

(7) कपूर की टिकिया अपने पास रखें और शाम को जला दें - इससे नकारात्मक उर्जा खत्म होगी।

(8) बुर्जुगों से आर्शीवाद लेते रहिए, विशेषतया सफेद बालों वाले बुजुर्गों से।

(9) आपके सोने वाले कमरे में नाकारात्मक उर्जा ना रहे - इसके लिए - पानी में सिरका (सफेद) और नमक डालकर रखें। सुबह उसे नाली में डाल दें - आपको तरो-ताजगी महसूस होती रहेगी।

himalayavedicworld.com

शिक्षा, बुद्धि और पढ़ाई

आगामी वैदिक ज्योतिष भविष्यवाणी, आपके लग्न, लग्नेश और विभिन्न भावेषों की स्थिति के आधार पर आपके शैक्षिक पथ और बौद्धिक क्षमताओं में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी। यह प्राचीन ज्ञान आपकी अंतर्निहित शक्तियों, संभावित चुनौतियों और आपके अधिगम की दिशा को समझने में आपकी मदद कर सकता है। आपके भविष्य को आकार देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, इस भविष्यवाणी की सराहना करना आपकी क्षमता को उजागर करने तथा आपकी शिक्षा एवं बौद्धिक गतिविधियों में रणनीतिक विकल्प बनाने की कुंजी हो सकती है।

लग्न – कर्क

आप बहुत बुद्धिमान होंगे एवं किसी भी चीज को समझने में बहुत कम समय लेंगे। आपकी शिक्षा बीच में बाधित हो सकती है या डिग्री प्राप्त करने में देरी हो सकती है लेकिन फिर भी आप कुछ जरुरी कौशल या प्रवीणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

लग्नेश – चन्द्रमा, नक्षत्र–उत्तरभाद्र

सकारात्मक : आप मीठी वाणी बोलने वाले, मददगार, मित्रवत व्यवहार करने वाले तथा हमेशा सीखने वाले व्यक्ति होंगे।

नकारात्मक : आप हिचकिचाने वाले, बहुत ज्यादा संवेदनशील एवं भावुक व्यक्ति होंगे।

शिक्षा, बुद्धि और पढ़ाई के मुख्य बिन्दु

(1) बुध आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आप बहस करने में बहुत आगे रहेंगे। आपको लड़ाई--झगड़ा करने में आनन्द मिल सकता है।

(2) मंगल आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 6 में स्थित है। आपका बौद्धिक स्तर निम्न स्तर का हो सकता है। आपके खराब स्वास्थ्य के कारण आपको शिक्षा प्राप्त करने में देरी हो सकती है या रुकावट पैदा हो सकती है।

himalayavedicworld.com

शिक्षा में सुधार, और पढ़ाई में उन्नति के लिए क्या उपाय करें ?

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन क माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।

(1) मां सरस्वती की पूजा करने के साथ अपनी जीभ पर केसर से उँ लिखें और उँ का उच्चारण करें।

(2) पढ़ते समय आपका मुंह हमेशा उत्तर–पूर्व में हों और पीठ दक्षिण या दक्षिण– पश्चिम की तरफ।

(3) माथे पर बिन्दी लगाने के स्थान पर दूध और हल्दी से तिलक लगायें और इसी स्थान, जिसको आज्ञा चक्र बोलते हैं, चन्दन का लेप करके सायें – बुद्धि, विवेक का विकास होगा, शिक्षा में रुचि बनी रहेगी।

(4) अनाथालयों में बच्चों के लिए कॉपी, किताब का प्रबंध करें।

(5) शुक्रवार को लाल फल बांटने से भी शिक्षा बाधा दूर होती है।

(6) बृहस्पतिवार के दिन चार लड्डू हाथ लगाकर बरगद और पीपल के नीचे जीव–जन्तुओं को डालें।

(7) अन्धेरे रास्ते में रोशनी का प्रबंध करें।

(8) मछलियों को जौ के आटे में गुड़ डालकर रोटी बनाकर या गोलियां बनाकर डालें।

himalayavedicworld.com

यात्रा और कारोबार

आगामी वैदिक ज्योतिष भविष्यवाणी आपकी यात्रा एवं व्यावसायिक प्रयासों से संबंधित संभावनाओं पर प्रकाश डालेगी। आपके लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति पर विचार करके, हम आपके जीवन के इन क्षेत्रों में संभावित अवसरों, चुनौतियों और रुझानों का पता लगा सकते हैं। इन ज्योतिषीय अंतर्दृष्टि को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यात्रा और व्यवसाय में आपके निर्णय लेने में मार्गदर्शन कर सकता है, जिससे आपको अधिक आत्मविश्वास और रणनीतिक दूरदर्शिता के साथ अपना पथ प्रशस्त करने में सहायता मिलेगी।

लग्न – कर्क

आप व्यवसाय या रोजगार के जो भी विकल्प ढूंढेंगे, उसमें सफलता प्रापत करेंगे। आप बहुत अधिक यात्रायें नहीं करेंगे।

यात्रा और कारोबार के मुख्य बिन्दु

(1) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 9 में स्थित है। अपने व्यपार में जनसंपर्क बढ़ाने के लिए जरुरी गुण विनम्रता, दूसरों को इज्जत देना तथा अन्य दूसरे गुण आपमें मौजूद होंगे।

(2) सूर्य आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आपको शुरुआत में अपने व्यवसायिक साझेदारों से बहुत ज्यादा फायदा होगा, लेकिन बाद में झगड़े हो सकते हैं एवं बंटवारा हो सकता है।

(3) गुरू आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 8 में स्थित है। आपको हर तरफ से कठोरता या अंकुश का सामना करना पड़ सकता है।

(4) मंगल आपकी कुण्डली में दशमेश हैं, और भाव संख्या 6 में स्थित है। आपको विश्वासयोग्य अधीनस्थ कर्मचारी मिलेंगे।

himalayavedicworld.com

कारोबार/ब्यापार नौकरी की समस्यायें दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है।

ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

(1) जौ का भूना आटा, नारियल का कसा हुआ बादाम, छुहारा (कसा हुआ) देसी शक्कर मिलाकर रोजाना पेड़ों के नीचे डालें जहां काले कीड़े-मकौड़े हों।
(2) शहद और काले तिल पीपल के नीचे शनिवार और मंगलवार को डालें।
(3) वृद्धा आश्रम में जाकर फल बांटें।
(4) गरीब कन्याओं की यथासंभव सहायता करें। बुध को मजबूती मिलेगी। व्यापार में बरकत बनी रहेगी।
(5) पिंजरों में बन्द पक्षियों को आजाद करायें।
(6) सरकारी नौकरी की बाधा दूर करने के लिए सूर्यदेव को केसर युक्त जल चढ़ायें और आदित्य हृदय स्रोत का पाठ करें।
(7) अपनी पत्नी को श्रृंगार का सामान देते रहें।

himalayavedicworld.com

आर्थिक स्थिति

जीवन में अपनी वित्तीय संभावनाओं और चुनौतियों को समझना महत्वपूर्ण है, और वैदिक ज्योतिष इस क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। आपके लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति के विश्लेषण के माध्यम से, हम धन–संपदा के संभावित मार्गों को चित्रित कर सकते हैं, बाधाओं की पहचान कर सकते हैं और उपचारात्मक उपाय सुझा सकते हैं। इस ज्ञान को अपनाने से आप अधिक जानकारीपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं, जिससे समृद्धि एवं सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा। यह याद रखना आवश्यक है कि ये भविष्यवाणियाँ केवल मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती हैं, आपके स्वयं के कार्यों और विकल्पों का आपके वित्तीय भविष्य पर अंतिम प्रभाव पड़ता है।

लग्न – कर्क

आपके जीवन में आर्थिक स्थिति में बदलाव होते रहेंगे। आपको पैतृक संपत्ति की प्राप्ति होगी। आपकी आमदनी अच्छी होगी। आप काफी खर्च कर सकते हैं तथा अपने जीवन के मध्य काल के दौरान काफी बर्बाद कर सकते हैं। आपको कई गाड़ियों का सुख प्राप्त होगा।

आर्थिक स्थिति के मुख्य बिन्दु

(1) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 9 में स्थित है। आप काफी सफल होंगे एवं आम लोग समाज में आपकी उपस्थिति को भाग्यशाली समझेंगे।

(2) सूर्य आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। अपने व्यवसाय के शुरुआती दौर में व्यवसायिक साझेदार से लाभ की प्राप्ति होगी, लेकिन बहुत जल्द आपके बीच झगड़ा हो सकता है एवं आप लोग एक--दूसरे से अलग हो सकते हैं।

(3) शनि आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप सट्टेबाजी या जुआ में अपनी संपत्ति बर्बाद कर सकते हैं।

(4) शनि आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आपको अचानक से धन हानि, चोरी का सामना करना पड़ सकता है या अचानक से कर्ज में डूब सकते हैं।

(5) गुरू आपकी कुण्डली में नवमेश हैं, और भाव संख्या 8 में स्थित है। किसी असावधानीवश कोई व्यक्ति आपका धन हड़प सकता है।

(6) शुक्र आपकी कुण्डली में एकादशेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आपको औरतों, खासकर काम--काजी पत्नी से लाभ प्राप्त होगा। महिलाओं के माध्यम से आपको प्र्याप्त धन लाभ होगा।

himalayavedicworld.com

आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूर्भर हो जाता है।

ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठ्वें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

(1) श्मशान में चुपके से कुछ पैसे रखकर आया करें – सिक्के।

(2) दूध का ज्यादा से ज्यादा दान करें, खासकर के गरीब कन्याओं को। बुध और चन्द्र को बल मिलेगा।

(3) श्री सूक्तम जी, कनकधारा, विष्णुसहस्रनाम, का पाठ, कभी भी धन बाधा नहीं होने देगी। मुश्किल समय में भी बरकत आती रहेगी।

(4) शुक्रवार के दिन घर में खीर का भोग बनाकर संध्या समय देसी घी की ज्योति जलायें और लक्ष्मी पूजन करें और खीर कन्याओं में बांटे – लक्ष्मी जी का साक्षात वास होता है।

(5) पत्नी को लक्ष्मी स्वरुपा मानकर आदर–सत्कार पूर्वक व्यवहार करें। शुक्र बलवती रहेगा। धन–सम्पदा की कमी नहीं रहेगी।

(6) घर में कच्चा स्थान रखें। फल, फूल वाले पौधे जरुर लगायें। दक्षिण–पश्चिम में भारी पौधे रखें। घर में बरकत रहेगी।

(7) शुक्रवार के दिन गरीब लोगों को, वृद्ध आश्रम में रहने वाले को फल बांटें।

(8) जौ का आटा, काले तिल और शक्कर, बादाम (महीन पीसकर) छुहारे काटकर+देसी घी में हल्के भूनकर – मिलाकर पेड़ों के नीचे डालें – कीड़े–मकौड़ो को।

himalayavedicworld.com

शादी–विवाह और जीवनसाथी

आपके वैदिक ज्योतिष चार्ट में लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति को समझना अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह न केवल आपकी व्यक्तिगत विशेषताओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है, बल्कि जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं, जैसे विवाह और आपके जीवन साथी के स्वभाव पर भी प्रकाश डालता है। ये ज्योतिषीय व्याख्याएं आपको संभावित चुनौतियों के लिए तैयार होने और इन महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं के लिए अनुकूल समय का लाभ उठाने की अनुमति देती हैं। इन भविष्यवाणियों से सीखकर, आप नियंत्रण की भावना और अपने भाग्य की दिशा प्राप्त कर सकते हैं, जिससे अंततः अधिक सूचित निर्णय लेना और व्यक्तिगत विकास संभव हो सकता है।

लग्न – कर्क

आपकी शादी अच्छे घर में होगी एवं आपके जीवनसाथी भी बहुत बढ़िया होंगे, लेकिन आपका पारिवारिक जीवन खुशहाल नहीं हो सकता है एवं आप मानसिक रुप से बहुत ही परेशान रह सकते हैं। आपको पारिवारिक जिम्मेदारीयों को अच्छी तरह निभाना चाहिए।

विवाह और जीवनसाथी के मुख्य बिन्दु

(1) सूर्य आपकी कुण्डली में द्वितियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आपका दांपत्य जीवन बहुत अधिक खुशहाल या संतोषप्रद नहीं हो सकता है। आपके जीवनसाथी बहुत अधिक खर्च करने वाले हो सकते हैं।

(2) बुध आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद या विरोधाभाष हो सकता है।

(3) शुक्र आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आपकी शादी खुशहाल होगी तथा अपने जीवनसाथी के साथ आपकी नजदीकियां बढ़ती जायेंगी।

(4) शनि आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। औरतों की वजह से आपका झगड़ा हो सकता है। आपके जीवनसाथी अक्सर बीमार रह सकते हैं। आपके जीवनसाथी किसी बीमारी से अक्सर ग्रसित रह सकते हैं। अपने जीवनसाथी के साथ किसी गलतफहमी के कारण आपका मनमुटाव या झगड़ा हो सकता है। आपको अपने जीवनसाथी से आपको ज्यदा प्यार नहीं मिल सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं।

(5) शनि आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आप घर--गृहस्थी को लेकर चिंतित हो सकते हैं।

(6) शुक्र आपकी कुण्डली में एकादशेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आपके जीवनसाथी काम--काजी होंगी तथा किसी क्षेत्र में कार्यरत होंगी।

(7) बुध आपकी कुण्डली में द्वादशेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। अपने जीवनसाथी के साथ आपका मनमुटाव हो सकता है। आपके जीवनसाथी ईर्ष्यालु एवं संदेह करने वाली हो सकती हैं।

himalayavedicworld.com

शीघ्र विवाह और विवाह बाधा दूर करने के लिए क्या उपाय करें ?

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

(1) विष्णुसहस्रनाम का पाठ कई बाधाओं से मुक्ति दिलाता है और शादी के योग सुगमता से बनते हैं।

(2) हल्दी के गांठों को केसर और सिन्दूर सफेद कपड़े में बांधकर, चांदी के गिलास में उत्तर-पूर्व में रखें और हर मंगलवार जलेबी का दान गरीबों में करें तो कभी भी आपको शादी की रुकावटों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

(3) हनुमान जी की प्रेमपूर्ण रुप से गुरु या भाई रुप में पूजा की जायें - सुन्दर काण्ड का पाठ, हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक का पाठ मंगल दोष से मुक्ति में सहायक होते हैं।

(4) हर वीरवार को बूंदी के 11 लड्डू पेड़ों के नीचे जीव-जंतुओं के निमित्त डालें।

(5) जिन घरों में बच्चों के शादी के योग नहीं बनते, वहां रामायण का पाठ करवाकर शुद्धि कराई जाए - शांति पाठ कराकर, हर अमावस्या को पितरों के नाम का भोजन गरीबों को खिलाया जाये - हर तरह की विघ्न बाधा का नाश होता हे।

(6) शुक्र के दूषित होने से या मंगल दोष, राहु दोष, अंगारक दोष होने से शादी नहीं हो रही है तो श्री सूक्तम जी का पाठ शादी की बहुत सी विघ्न-बाधाओं का नाश करेगा।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

वैदिक ज्योतिष के माध्यम से अपने पारिवारिक जीवन को समझना, विशेष रूप से आपके लग्न और विभिन्न गृह स्वामियों की स्थिति के विश्लेषण के माध्यम से, समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। ये भविष्यवाणियाँ आपके पारिवारिक रिश्तों की गुणवत्ता, पारिवारिक गतिशीलता और संभावित मुद्दों या आशीर्वादों की एक झलक प्रदान करती हैं। इस ज्ञान के होने से, आप अपने पारिवारिक जीवन की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, मजबूत रिश्तों को बढ़ावा दे सकते हैं, और आने वाली किसी भी चुनौती के लिए तैयार हो सकते हैं। यह ज्ञान आपके समग्र कल्याण को बढ़ाते हुए, अधिक सामंजस्यपूर्ण पारिवारिक वातावरण में योगदान देता है।

लग्न – कर्क

आपके पारिवारिक खुशियों में कमी हो सकती है। आपके भाई–बहन अच्छी स्थिति में होंगे, लेकिन आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आप अपने भाई–बहनों के प्रिय होंगे एवं अक्सर उनकी मदद करते रहेंगे। आपके संबंधी भी आपको बहुत प्यार करेंगे। आपकी माता बहुत अच्छी होंगी, लेकिन वे कुछ चिंतित रह सकती हैं। आपको संतान का सुख भी प्राप्त होगा।

पारिवारिक जीवन के मुख्य बिन्दु

(1) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 9 में स्थित है। आप अपने माता--पिता एवं परिवार के दूसरे बुजुर्गों का सम्मान करेंगे।

(2) बुध आपकी कुण्डली में तृतियेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। अपने भाई--बहनों के साथ आपका वैचारिक मतभेद या विवाद हो सकता है।

(3) शुक्र आपकी कुण्डली में चतुर्थेश हैं, और भाव संख्या 7 में स्थित है। आप अपनी माता के साथ खुशहाल जीवन का आनंद प्राप्त करेंगे।

(4) मंगल आपकी कुण्डली में पंचमेश हैं, और भाव संख्या 6 में स्थित है। आप अपने खराब स्वास्थ्य, खराब संगति एवं बुरी आदतों की वजह से एक पहेली बनकर रह सकते हैं। आपकी संतानों को भी इससे परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

(5) शनि आपकी कुण्डली में अष्टमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। आपकी किसी संतान को शारिरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

himalayavedicworld.com

सुखी वैवाहिक/पारिवारिक जीवन के लिए क्या उपाय करें ?

ब्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति–पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने–अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर–परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।

(1) दाम्पत्य सुख के लिए अपने शयनकक्ष में राधा–कृष्ण की तस्वीर जरुर लगायें।

(2) आपके शयनकक्ष में कोई शीशा न हो या ऐसा कोई कांच जिसमें आपकी परछाई नजर आती हो।

(3) आपके घर में फल–फूलों वाले पौधे जिसमें कांटे ना हो जरुर लगायें, बुध और शुक्र दाम्पत्य सुख की वृद्धि करते हैं।

(4) गुलाब की पत्तियां, जामुन की पत्तियां, अशोक के पत्ते आपने शयन कक्ष में रखें। सूखने पर बदलते रहें।

(5) उं सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके शरणये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते का जाप घर में सुख समृद्धि और मांगलिक कार्यों को प्रेरित करेगा।

(6) पूर्णिमा, संक्रांति और अमावस्या पर नौ अनाज भिंगोकर (9 किलो) अगर पक्षियों को डाला जाए तो दाम्पत्य सुख की हर बाधा का नाश होता है।

(7) अगर शराब पीने की वजह से परिवार में अशान्ति आती है तो भैरो जी को पिता के रुप में मानते हुए सवा किलो जलेबी का प्रसाद चढ़ाए और समस्या के समाधान की आस्थापूर्वक प्रार्थना करें।

(8) बबूल के पेड़ को, पीपल के पेड़ को, बरगद को जो वीराने में खड़े होते हैं – जिन्हें कोई जल नहीं देता, देसी शक्कर – सफेद तिल और जल मिलाकर अर्पण करें – दाम्पत्य सुख बना रहेगा।

(9) गरीब कन्याओं को लाल जोड़ा या हरा जोड़ा – शादी के लिए दान किया जाये तो भी दाम्पत्य सुख बना रहता है।

himalayavedicworld.com

जीवन शैली और सामाजिक स्थिति

आपके वैदिक ज्योतिष चार्ट में लग्न और विभिन्न भावाधिपतियों की स्थिति का विश्लेषण करने से आपकी जीवनशैली और सामाजिक स्थिति के बारे में गहन जानकारी मिल सकती है। ये भविष्यवाणियाँ आपको इस बारे में मार्गदर्शन कर सकती हैं कि आप कैसा जीवन जी सकते हैं और समाज में आपकी स्थिति क्या है। इन्हें समझने से आपको अपना मार्ग अधिक प्रभावी ढंग से संचालित करने और अपने ज्योतिषीय स्थिति की क्षमता का दोहन करने में मदद मिल सकती है। यह ज्ञान आपको रणनीतिक निर्णय लेने की दूरदर्शिता से सुसज्जित करता है, संभावित रूप से आपकी सामाजिक स्थिति एवं जीवनशैली में सुधार करता है, इस प्रकार समग्र खुशी और सफलता में योगदान देता है।

लग्न – कर्क

आप धार्मिक लोगों के साथ संबंध बनाकर रखेंगे। आप धार्मिक स्वभाव वाले होंगे। अच्छी आर्थिक स्थिति होने के बावजूद मानसिक शांति एवं खुशियों में कमी हो सकती है। आप अपने जीवनकाल के दौरान कई तरह की समस्याओं एवं मानसिक तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करेंगे, लेकिन उनसे सफलता पूर्वक बाहर निकलने में सक्षम होंगे।

जीवन शैली और सामाजिक स्थिति के मुख्य बिन्दु

(1) चन्द्रमा आपकी कुण्डली में लग्नेश हैं, और भाव संख्या 9 में स्थित है। आप बहुत ही उत्तम स्थिति में होंगे। इसके साथ ही आप सफल होंगे एवं प्रसिद्ध होंगे। आध्यात्मिकता की तरफ आपकी रुची में बढ़ोतरी होगी एवं आप उन्नति करेंगे।

(2) शनि आपकी कुण्डली में सप्तमेश हैं, और भाव संख्या 12 में स्थित है। महिलाओं के कारण आपको अपमानित होना पड़ सकता है।

himalayavedicworld.com

मकान/आवास सुख के लिए क्या उपाय करें ?

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह-तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख-शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार-चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग-अलग होने के कारण सबको अलग-अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

(1) जिस घर में या भूमि पर रहते हैं रोजाना भूमि को प्रणाम करें, दूध से धुलाई करें और हनुमान जी की उपासना करें। भाग्यानुसार और कर्मानुसार आपको आवास सुख शानदार मिलेगा।

(2) अपने घर के पृथ्वी तत्व यानि दक्षिण-पश्चिम यानि राहु के स्थान पर बड़े और भारी पेड़-पौधे लगायें, घर में बरकत और सुख समृद्धि बनी रहेगी। अपने भाई से हमेशा बना कर रखें।

(3) अपनी पत्नी के भाई के साथ स्नेह भाव रखें।

(4) मकान खरीदने में अगर समस्या आती है तो हनुमान जी की उपासना करें,। सिन्दूर का चोला चढ़ायें और आंखों में सफेद सुरमा लगायें।

(5) मंगल की शुभता के लिए शहद और सफेद तिल मंगलवार को, वीरवार को, रविवार को पहली होरा में पेड़ों के नीचे जीव-जंतुओं को डालें। कभी भी अमंगल नहीं होगा।

(6) पिछले जन्म के पितृ भ्रमण और पापकर्म की वजह से मकान सुख नहीं है, तो बेजुबानों की सेवा करें, वृक्षों को जल दें, बंजर भूमि को सींचें।

himalayavedicworld.com

अच्छे वाहन सुख के लिए क्या उपाय करें

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई-कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं।

ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे तो वह स्वयं की सुरक्षा के साथ-साथ वाहन का सुख भ भरपूर प्राप्त कर सकता है।

(1) लक्ष्मी जी और संतोषी मां की पूजा करें। श्री सूक्तम, कनकधारा और लक्ष्मी महातम का पाठ करने से वाहन सुख में कभी कमी नहीं आती।

(2) अपने हाथों से मीठी खील, दूध का छीटा देकर हर शुक्रवार को सूर्य उदय होने पर पेड़ों के नीचे - जहां कीड़े-मकौड़े हो डालें।

(3) वाहन अगर बार-बार खराब होता है तो सफेद गाय के मूत्र से छीटे दें।

(4) नारी जाति का सम्मान करें, मंदिर में रुई की बत्तियां, घी और मिट्टी के दीपक दे, गायों की सेवा करें।

(5) घर में नंगे पैर कभी न चलें।

himalayavedicworld.com

भाग्यवृद्धि के लिए क्या उपाय करें ?

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य का लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से ही प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशियां अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का भाग्य भी उसके साथ होता है जो

(1) दीन-दुखियों की सेवा करें।
(2) अन्न का दान जरुरतमंदों को करें।
(3) पशु-पक्षियों के लिए अन्न जल का प्रबंध करें।
(4) लूले, लंगड़े की सेवा, दवाई का दान, अंध विद्यालय, वृद्ध आश्रम और अनाथालय में सामर्थ्यनुसार सेवा करते रहें।
(5) कमजोर के प्रति दया भाव रखें।
(6) मां-बाप की सेवा करें। बुर्जुगों से आर्शीवाद लें।
(7) पीपल, बरगद और कीकर भी बुर्जुग ही हैं, सेवा करते रहें।
(8) मांस-मदिरा का सेवन न करें। तामसिक वृतियों से परहेज करें।
(9) पिंजरे से पक्षियों को आजाद करायें। कसाई से जानवर आजाद कराकर जंगलों में छोड़ दें।
(10) असहाय लोगों को जरुरतनुसार मदद करें, चाहे दवाई हों, अन्न, जूता या कपड़ा हों।
(11) अच्छे कर्मों से जीवन यापन करिये - वर्तमान में सुधरेगा तो भविष्य भी प्रबल होगा।

himalayavedicworld.com

जीवन रत्न

यह रत्न आपके लिये धन, पद, स्वास्थ्य, आयु वृद्धि कारक रहेगा।

ग्रह विवरण

लग्न	कर्क
नक्षत्र	उत्तरभाद्र - 3
लग्नाधिपति	चन्द्रमा
उच्चस्थ	---
मूलत्रिकोन	---
स्वराशिगत	---
अस्त	---
नीचस्थ	---
वक्री	---
केन्द्रगत	---
त्रिकोनगत	हाँ
मारक भाव में	---
त्रिक भाव में	---
केन्द्राधिपति	हाँ
त्रिकोनाधिपति	---
मारकेश	---
त्रिकभावपति	---

रत्न विवरण

रत्न	मोती (पर्ल)
उप-रत्न	
चन्द्रकान्त मणि(मून स्टोन), सफेद हकीक(व्हाईट एगेट)	
दिन	सोमवार
नक्षत्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
विपरीत-रत्न	
हीरा, पन्ना, नीलम, गोमेद	
मंत्र	
ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः (11000 जप)	
दान विवरण 1	
मोती, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दधि, घृत, शंख, कपूर	
दान विवरण 2	
श्वेत वस्त्रा, श्वेत पुष्प, श्वेत बैल, श्वेत चन्दन	
रत्न कैसे धारण करें	
मोती चार रत्ती का रजत की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली में सोमवार को संध्याकाल में दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद चन्द्र के तांत्रिक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्यास्त पूर्व धारण करना श्रेष्ठ फलप्रद रहता है।	

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे सागरोद्भवाय धीमहि तन्नश्चन्द्रः प्रचोदयात् ।

चन्द्रः कर्कटकप्रभुः सितनिभश्चात्रेय गोत्रोद्भव-
श्चाग्नेयश्चतुरस्र वारुणमुखश्चापोऽप्युमाधीश्वरः।
षट् सप्तानि दशैक शोभनफल शौरिः प्रियोऽर्को गुरुः
स्वामी यामुनदेशजो हिमकरः कुर्यात् सदा मंगलम।।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः (11000 जप)

प्रोग्राम का निष्कर्ष

आपका लग्नेश चन्द्रमा है। चूंकि यह ना तो नीचस्थ है और ना ही त्रिक भाव या मारक भाव में स्थित है। इसलिए आप चन्द्रमा के लिए रत्न धारण कर सकते हैं।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

himalayavedicworld.com

भाग्य रत्न

यह रत्न आपके भाग्योदय, व्यापार में वृद्धि, धन लाभ में वृद्धि तथा नौकरी में उन्नत्ति कारक रहेगा।

4

ग्रह विवरण

लग्न	कर्क
नक्षत्र	उत्तरभाद्र - 3
नवमेश	गुरु
उच्चस्थ	---
मूलत्रिकोन	---
स्वराशिगत	---
अस्त	---
नीचस्थ	---
वक्री	---
केन्द्रगत	---
त्रिकोनगत	---
मारक भाव में	---
त्रिक भाव में	हाँ
केन्द्राधिपति	---
त्रिकोनाधिपति	हाँ
मारकेश	---
त्रिकभावपति	हाँ

रत्न विवरण

रत्न	पुखराज (येलो सफायर)
उप-रत्न	
सुनैला(सिटरीन), पीला हकीक(येलो एगेट)	
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	पुनर्वसु, विषाखा, पू. भाद्रपद
विपरीत-रत्न	
हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनियां	
मंत्र	
ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः गुरुवे नमः (19000 जप)	
दान विवरण 1	
पुखराज, स्वर्ण, काँस्य, चना दाल, खांड, घृत, पुस्तक	
दान विवरण 2	
पीत वस्त्रा, पीत पुष्प, हल्दी, घोड़ा, पीत फल, लवण	
रत्न कैसे धारण करें	
पुखराज (पीला) साढ़े पांच रत्ती का स्वर्ण की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में गुरुवार को प्रातः दूध व गंगाजल से शुद्ध करके धूप अगरबत्ती करने के बाद गुरु के तांत्रिक मंत्रा की एक माला का जाप करके सूर्योदय से लेकर एक घंटे के बीच धारण करना शुभ फलप्रद रहता है।	

ओं अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

जीवश्चांगिर-गोत्रजोत्तरमुखो दीर्घोत्तरा संस्थितः।
पीतोऽश्वत्थ समिद्ध सिन्धुजनितश्चापोऽथमीनाधिपः।।
सूर्येन्दु क्षितिज प्रियो बुध सितौ शत्रू ममाश्चापरे।
सप्तांकद्विभवः शुभः सुगुरुः कुर्यात् सदा मङ्गलम।।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः गुरुवे नमः (19000 जप)

प्रोग्राम का निष्कर्ष

चूंकि आपका नवमेश आपकी कुण्डली में किसी त्रिक भाव का स्वामी है, इसलिए नवमेश के लिए कोई रत्न धारण करना आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा।

यद्यपि इस प्रोग्राम में हम रत्न धारण करने या ना करने की बहुत सी कण्डीशन को चेक कर रहें हैं, फिर भी विद्वान ज्यातिषी की सलाह अंतिम मानी जायेगी।

ज्योतिषी का निष्कर्ष

himalayavedicworld.com

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

शनि साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि है, जब शनि किसी व्यक्ति के ज्योतिषीय कुण्डली में जन्म के चंद्रमा (जन्म राशि) से 12वें, पहले और दूसरे घर में गोचर करता है। यह अवधि प्रायः जीवन की चुनौतियों, सीखने के अनुभवों और संभावित परिवर्तनों के माध्यम से विकास से संबद्ध होती है, लेकिन यह कठिनाइयाँ और परीक्षण भी ला सकती है जिन्हें व्यक्ति को धैर्य, अनुशासन और लचीलेपन के माध्यम से दूर करना होगा। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि साढ़े साती का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होता है और काफी हद तक उनकी व्यक्तिगत कर्म यात्रा पर निर्भर करता है।

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	कुम्भ	05:03:1993	15:10:1993	0 y.7 m.11 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	कुम्भ	10:11:1993	02:06:1995	1 y.6 m.21 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मीन	02:06:1995	10:08:1995	0 y.2 m.8 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मीन	16:02:1996	17:04:1998	2 y.1 m.29 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)					
कंटक शनि	मिथुन	23:07:2002	08:01:2003	0 y.5 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	07:04:2003	06:09:2004	1 y.5 m.0 d.	
अष्टम शनि	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	कुम्भ	29:04:2022	12:07:2022	0 y.2 m.13 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	कुम्भ	17:01:2023	29:03:2025	2 y.2 m.10 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मीन	29:03:2025	03:06:2027	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मीन	20:10:2027	23:02:2028	0 y.4 m.4 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	
कंटक शनि	मिथुन	31:05:2032	13:07:2034	2 y.1 m.12 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)					
अष्टम शनि	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	कुम्भ	25:02:2052	14:05:2054	2 y.2 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	कुम्भ	02:09:2054	05:02:2055	0 y.5 m.4 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मीन	14:05:2054	02:09:2054	0 y.3 m.19 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मीन	05:02:2055	07:04:2057	2 y.2 m.0 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)					
कंटक शनि	मिथुन	11:07:2061	13:02:2062	0 y.7 m.4 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	07:03:2062	24:08:2063	1 y.5 m.18 d.	
अष्टम शनि	तुला	04:11:2070	05:02:2073	2 y.3 m.2 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	तुला	31:03:2073	23:10:2073	0 y.6 m.23 d.	

himalayavedicworld.com

गोचर शनि (शनि साढेसाती) का फल और उपाय

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यों का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –कुम्भ

Start -05:03:1993

End -15:10:1993

Duration -0 y.7 m.11 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:11:1993

End -02:06:1995

Duration -1 y.6 m.21 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण के प्रारम्भ में ही आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशांत रह सकते हैं एवं आर्थिक हानि भी हो सकती है। आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है। अपनी पूर्ण कोशिश के बावजूद भी खर्च पर नियंत्रण करने में असफल हो सकते हैं। धर्म एवं आध्यात्म की ओर आपका रूझान होगा। आप धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपना

himalayavedicworld.com

अड़ियल रवैया त्यागने का प्रयत्न करें। आप थोड़े जिद्दी हो सकते हैं। यदि कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप काफी उत्तेजित एवं क्रोधित हो सकते हैं।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो अपने क्रोधित एवं अड़ियल स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का विरोध सह सकते हैं। घरेलू जिन्दगी में भी छोटी–छोटी बातों पर झगड़े हो सकते हैं। अपनी अलाचनाओं के कारण आप काफी परेशान रह सकते हैं। आपको अपने परिवार से मदद नहीं मिल सकती है। आपकी सहनशक्ति खत्म हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर काफी उत्तेजित हो सकते हैं। किसी के द्वारा समझाये जाने पर उसका अपमान कर सकते हैं एवं झगड़ा भी कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण के दौरान आपको हानि हो सकती है। आपका भुगतान रूक सकता है। व्यापार जगत में आपकी बदनामी हो सकती है। आपके व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपको अपना व्यवसाय बचाने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने व्यवसाय में गोपनीयता ना रखने के कारण आपको अधिक हानि हो सकती है। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने में काफी सफल हो सकते हैं।

नित्य आने वाली समस्याओं के कारण आप व्यसन की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपको व्यसन की लत डलवाकर आपके पैसे पर ऐश कर सकते हैं। किसी भी तरह की नशा करने पर आपकी स्थिति और अधिक खराब हो सकती है। आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा कर सकते हैं, लेकिन आपको किसी तरह का लाभ होने की संभावना नहीं है। इस चरण के दौरान आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रारम्भ में आपको हानि हो सकती है, लेकिन बहुत शीघ्र आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। मशीनरी एवं चिकित्सा संबंधी कार्य आपको लाभ दे सकते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बढ़िया संपर्क बनाकर रखें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -02:06:1995

End -10:08:1995

Duration -0 y.2 m.8 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:02:1996

End -17:04:1998

Duration -2 y.1 m.29 d.

इस चरण में आपको अधिकांशतः अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप आर्थिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हांलाकि, आप काफी मेहनत करेंगे, लेकिन अंतिम परिणाम निराशाजनक को सकता है। आप अपने राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हैं, लेकिन अपने क्रोधी स्वभाव के एवं कठोर वाणी के कारण उसमें सफल नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आप अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। आप आलसी हो सकते हैं। आपके छोट भाई– बहन को भी कुछ कष्ट हो सकता है। धर्म एवं आध्यात्म में आपकी रूचि हो सकती है। आप ज्योतिष या किसी गुप्त विद्या की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। किसी ढोंगी तांत्रिक के चक्कर में आकर आर्थिक हानि के साथ–साथ शारीरिक कष्ट भी उठा सकते हैं। अपने रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। उनके साथ तनाव होने की संभावना है, जिसके कारण आपके संबंध खराब हो सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन पर उचित ध्यान दें। ऐसा

himalayavedicworld.com

कोई भी कार्य ना करें, जिससे आपके जीवनसाथी को ठेस लगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। नित्य ही एक नई समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी नाखुश हो सकते हैं।

आपके अधिनस्थ कर्मचारी एवं सहकर्मी आपके प्रति बैर भाव रख सकते हैं। उनके विरोध के कारण आपका स्थानान्तरण हो सकता है। यदि व्यवसाय करते हैं, तो आपको सत्तापक्ष से सावधान रहना चाहिए। अपने व्यवसाय के हिसाब–किताब को ठीक रखें। अपना कर समय पर चुकाते रहें। आपके प्रतिद्वन्द्वी आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने व्यवसाय को नया रूप देने के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विशेषकर साझेदारी में। आपको धोखा तथा तनाव मिल सकता है। हर तरह के गलत कार्य से दूर रहें, अन्यथा उलझन में फँस सकते हैं।

अचानक होने वाली हानि के कारण आप अधिक क्रोधित हो सकते हैं एवं अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं, जिससे आपको अधिक हानि हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। अपने जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक यात्रा कर सकते हैं। कोई भी काम काफी सोच–समझकर करें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। आपके शत्रु मौके की तलाश में हो सकते हैं, कहीं धन निवेश एवं उधार देने से बचें, आपका पैसा डूब सकता है। मानसिक अशांति के कारण अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, अन्यथा किसी बड़ी समस्या में पड़ सकते हैं। आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

इस चरण में आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है तथा आपका क्रोध बढ़ सकता है, जिसकी वजह से आपको हानि हो सकती है। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और सभी के साथ आपका व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो सकता है। आप हर बात में अपना स्वार्थ चाहेंगे, जिससे आपकी छवि खराब हो सकती है। आपके प्रति सभी का व्यवहार बदल सकता है। अपने खान–पान पर आपका नियंत्रण नहीं हो सकता है, जिससे आपको अपच एवं उदर विकार हो सकता है। मुख एवं गले के रोग होने की संभावना है।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप पर दोषारोपण हो सकता है, जिसकी वजह से आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी जा सकती है। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने की आपकी सारी योजनाएं विफल हो सकती हैं। योजना शुरू करने के हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपनी कोई अचल संपत्ति भी बेचनी पड़ सकती है। आपको समस्या मुक्त करने के लिए आपकी माता या मौसी आर्थिक मदद करना चाह सकती हैं, लेकिन आप अपने व्यवहार से यह मौका गवां सकते हैं। आप खुद अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं, जो कि विफल हो सकता है। आप छोटी–छोटी समस्याओं से भी घबरा सकते हैं। आप पैतृक संपत्ति से वंचित हो सकते हैं। यदि संपत्ति संबंधित कोई विवाद अदालत में चल रहा हो, तो उसे टालने का प्रयत्न करें, आपके खिलाफ फैसला हो सकता है।

भवन निर्माण संबंधी आपकी योजना विफल हो सकती है। आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। दूसरे अन्य कार्यों में मिली–जुली सफलता मिल सकती है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद आप भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने का प्रयास कर सकते हैं। आर्थिक तंगी होने के बाद भी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं, जिसके लिए बाद में पछतावा हो सकता है। परिवार में होने वाले क्लेश के कारण मानसिक कष्ट

himalayavedicworld.com

हो सकता है।

आपको अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। संतान से कष्ट, कार्य में असफलता एवं हानि तथा परिवार में क्लेश के कारण आप अपने जीवन से निराश हो सकते हैं। आप आत्मविश्वास खो सकते हैं, जिससे आप मानसिक तनाव में रहेंगे। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पहले ही उसके असफल होने का भय आप पर हावी हो सकता है और उस काम को आप ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। अपने अन्दर आत्मविश्वास बनाकर रखें। अपने निकटतम लोगों से परामर्श लें। कोई नया काम शुरू ना करें तथा ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे परिवार या समाज में हानि एवं अपमान का भय हो।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –मिथुन

Start -23:07:2002

End -08:01:2003

Duration -0 y.5 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -07:04:2003

End -06:09:2004

Duration -1 y.5 m.0 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। इस चरण के प्रारम्भ में ही किसी उंचे तबके के व्यक्ति या पुलिस अधिकारी से आपकी अनबन हो सकती है। उनके माध्यम से बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। किसी मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए सपरिवार यात्रा कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सचेत रहें, चोरी के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। किसी अन्य कारण से आपका अपमान भी हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, लेकिन इसी समाचार के कारण अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद हो सकता है। परिवार में किसी विवाद के कारण धन–संपत्ति की हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो अचानक किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जहां हानि होने की काफी संभावना है। कोई नई योजना ना बनायें, असफल हो सकते हैं। आपकी असफलता में आपके परिवार का ही अप्रत्यक्ष हाथ हो सकता है। अपनी असफलता के कारण आप मानसिक तनाव में आ सकते हैं। नौकरी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। अपनी जिम्मेदारी सावधानी से निभायें, अन्यथा संकट में फँस सकते हैं।

यदि आपकी नौकरी या व्यवसाय का कोई मामला अदालत में चल रहा है, तो आपको हानि हो सकती है। ऐसे किसी कार्य को टालना ही बेहतर होगा। आपका कोई विशेष कार्य सिद्ध हो सकता है। इसके लिए भारी विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। वाहन के प्रति सावधानी बरतें, चोरी का खतरा है। कोई नई योजना ना बनायें, आर्थिक हानि हो सकती है। इसके लिए आपके परिवार में भी विवाद हो सकता है। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु 38 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपकी माता के जीवन को खतरा हो सकता है। अपनी संतान की बीमारी पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है।

इस चरण के दौरान अपनी मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपके सामने व्यर्थ के खर्चे

himalayavedicworld.com

अधिक हो सकते हैं, जिनसे आप मानसिक तनाव महसूस कर सकते हैं। भोग–विलास की वस्तुएं खरीदने में अधिक खर्च कर सकते हैं, लेकिन बाद में पछतावा हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर में तनाव या झगड़े का असर आपके काम पर पड़ सकता है। चरण के अंतिम समय में की गई यात्रा लाभदायक साबित हो सकती है। किसी भी तरह की संपत्ति के विवाद से दूर रहें, अन्यथा आपको हानि के साथ–साथ उलझन भी हो सकती है। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। शुभ कार्य के साथ–साथ कोई अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है। आपके प्रयासों से कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो चरण के अंतिम 6 महिनों में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आपके घर में ही आपके कार्यों का विरोध हो सकता है, लेकिन घर के बाहर आपको सम्मान प्राप्त होगा।

इस चरण के दौरान अपने जीवनसाथी एवं माता–पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके माता–पिता को नेत्र संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है। अपनी सावधानी से आप दुर्घटना से बच सकते हैं। अपने ही किसी आदमी, जिसे आप हितैषी समझते हैं, के कारण आपको कोई बड़ी हानि हो सकती है। अपने दाम्पत्य जीवन पर ध्यान दें। परायी स्त्रियों से दूर रहें, अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन की शांति भंग हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि सातवें भाव का स्वामी पाप प्रभाव में है, तो आपका दाम्पत्य जीवन खतरे में आ सकता है।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

इस चरण के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकता है। हालांकि, आपको शुभ फल कम और अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। इस चरण के दौरान आपकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा हो सकता है। संभव है, कि आपके पिता आपसे अधिक संपत्ति आपके भाईयों के नाम पर कर दें। धन के मामलें में सावधानी बरतें। कहीं भी काफी सोच–समझ कर ही धन खर्च करें, अन्यथा हानि हो सकती है। आप कोई लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं। यात्रा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। किसी महिला से संपर्क में आ सकते हैं, जिनसे आर्थिक लाभ हो सकता है।

एक तरफ जंहा आप आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर खर्चों से भी परेशान रह सकते हैं। पूजा–पाठ में मन लगायें। आने वाले समय में आप भीषण संकट में आ सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके सामने व्यापार के नये मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायियों के षडयंत्र के कारण आप कोई आपूर्ति समय पर करने में असफल हो सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है एवं आपका अपमान भी हो सकता है। अपनी योजनायं गुप्त रखें, तभी आप सफल हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपका तबादला हो सकता है।

आपको अपनी संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। आपको अचानक कोई बड़ा खर्च करना पड़

himalayavedicworld.com

सकता है। इस चरण के दौरान आप काफी व्यस्त रहेंगे, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं होगा। आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। कोई मांगलिक कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। अपने किसी रिश्तेदार के कारण किसी भूमि विवाद का सामना करना पड़ सकता है। आपका निवास परिवर्तन हो सकता है। किसी महिला से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने कार्यों में होने वाली देरी से मन में बेचैनी रह सकती है। असफलताओं के कारण आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –कुम्भ

Start -29:04:2022

End -12:07:2022

Duration -0 y.2 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -17:01:2023

End -29:03:2025

Duration -2 y.2 m.10 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण के प्रारम्भ में ही आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशांत रह सकते हैं एवं आर्थिक हानि भी हो सकती है। आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है। अपनी पूर्ण कोशिश के बावजूद भी खर्च पर नियंत्रण करने में असफल हो सकते हैं। धर्म एवं आध्यात्म की ओर आपका रूझान होगा। आप धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपना अड़ियल रवैया त्यागने का प्रयत्न करें। आप थोड़े जिद्दी हो सकते हैं। यदि कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप काफी उत्तेजित एवं क्रोधित हो सकते हैं।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो अपने क्रोधित एवं अड़ियल स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का विरोध सह सकते हैं। घरेलू जिन्दगी में भी छोटी–छोटी बातों पर झगड़े हो सकते हैं। अपनी अलाचनाओं के कारण आप काफी परेशान रह सकते हैं। आपको अपने परिवार से मदद नहीं मिल सकती है। आपकी सहनशक्ति खत्म हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर काफी उत्तेजित हो सकते हैं। किसी के द्वारा समझाये जाने पर उसका अपमान कर सकते हैं एवं झगड़ा भी कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण के दौरान आपको हानि हो सकती है। आपका भुगतान रूक सकता है। व्यापार जगत में आपकी बदनामी हो सकती है। आपके व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपको अपना व्यवसाय बचाने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने व्यवसाय में गोपनीयता ना रखने के कारण आपको अधिक हानि हो सकती है। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने में काफी सफल हो सकते हैं।

नित्य आने वाली समस्याओं के कारण आप व्यसन की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपको व्यसन की लत डलवाकर आपके पैसे पर ऐश कर सकते हैं। किसी भी तरह की नशा करने पर आपकी स्थिति और अधिक खराब हो सकती है। आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा कर सकते हैं,

himalayavedicworld.com

लेकिन आपको किसी तरह का लाभ होने की संभावना नहीं है। इस चरण के दौरान आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रारम्भ में आपको हानि हो सकती है, लेकिन बहुत शीघ्र आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। मशीनरी एवं चिकित्सा संबंधी कार्य आपको लाभ दे सकते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बढ़िया संपर्क बनाकर रखें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -29:03:2025

End -03:06:2027

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:10:2027

End -23:02:2028

Duration -0 y.4 m.4 d.

इस चरण में आपको अधिकांशतः अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप आर्थिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हांलाकि, आप काफी मेहनत करेंगे, लेकिन अंतिम परिणाम निराशाजनक को सकता है। आप अपने राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हैं, लेकिन अपने क्रोधी स्वभाव के एवं कठोर वाणी के कारण उसमें सफल नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आप अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। आप आलसी हो सकते हैं। आपके छोट भाई– बहन को भी कुछ कष्ट हो सकता है। धर्म एवं आध्यात्म में आपकी रूचि हो सकती है। आप ज्योतिष या किसी गुप्त विद्या की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। किसी ढोंगी तांत्रिक के चक्कर में आकर आर्थिक हानि के साथ–साथ शारीरिक कष्ट भी उठा सकते हैं। अपने रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। उनके साथ तनाव होने की संभावना है, जिसके कारण आपके संबंध खराब हो सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन पर उचित ध्यान दें। ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे आपके जीवनसाथी को ठेस लगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। नित्य ही एक नई समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी नाखुश हो सकते हैं।

आपके अधिनस्थ कर्मचारी एवं सहकर्मी आपके प्रति बैर भाव रख सकते हैं। उनके विरोध के कारण आपका स्थानान्तरण हो सकता है। यदि व्यवसाय करते हैं, तो आपको सत्तापक्ष से सावधान रहना चाहिए। अपने व्यवसाय के हिसाब–किताब को ठीक रखें। अपना कर समय पर चुकाते रहें। आपके प्रतिद्वन्द्वी आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने व्यवसाय को नया रूप देने के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विशेषकर साझेदारी में। आपको धोखा तथा तनाव मिल सकता है। हर तरह के गलत कार्य से दूर रहें, अन्यथा उलझन में फँस सकते हैं।

अचानक होने वाली हानि के कारण आप अधिक क्रोधित हो सकते हैं एवं अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं, जिससे आपको अधिक हानि हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। अपने जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक यात्रा कर सकते हैं। कोई भी काम काफी सोच–समझकर करें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। आपके शत्रु मौके की तलाश में हो सकते हैं, कहीं धन निवेश एवं उधार देने से बचें, आपका पैसा डूब सकता है। मानसिक अशांति के कारण अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, अन्यथा किसी बड़ी

himalayavedicworld.com

समस्या में पड़ सकते हैं। आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

इस चरण में आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है तथा आपका क्रोध बढ़ सकता है, जिसकी वजह से आपको हानि हो सकती है। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और सभी के साथ आपका व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो सकता है। आप हर बात में अपना स्वार्थ चाहेंगे, जिससे आपकी छवि खराब हो सकती है। आपके प्रति सभी का व्यवहार बदल सकता है। अपने खान–पान पर आपका नियंत्रण नहीं हो सकता है, जिससे आपको अपच एवं उदर विकार हो सकता है। मुख एवं गले के रोग होने की संभावना है।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप पर दोषारोपण हो सकता है, जिसकी वजह से आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी जा सकती है। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने की आपकी सारी योजनाएं विफल हो सकती हैं। योजना शुरू करने के हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपनी कोई अचल संपत्ति भी बेचनी पड़ सकती है। आपको समस्या मुक्त करने के लिए आपकी माता या मौसी आर्थिक मदद करना चाह सकती हैं, लेकिन आप अपने व्यवहार से यह मौका गवां सकते हैं। आप खुद अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं, जो कि विफल हो सकता है। आप छोटी–छोटी समस्याओं से भी घबरा सकते हैं। आप पैतृक संपत्ति से वंचित हो सकते हैं। यदि संपत्ति संबंधित कोई विवाद अदालत में चल रहा हो, तो उसे टालने का प्रयत्न करें, आपके खिलाफ फैसला हो सकता है।

भवन निर्माण संबंधी आपकी योजना विफल हो सकती है। आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। दूसरे अन्य कार्यों में मिली–जुली सफलता मिल सकती है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद आप भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने का प्रयास कर सकते हैं। आर्थिक तंगी होने के बाद भी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं, जिसके लिए बाद में पछतावा हो सकता है। परिवार में होने वाले क्लेश के कारण मानसिक कष्ट हो सकता है।

आपको अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। संतान से कष्ट, कार्य में असफलता एवं हानि तथा परिवार में क्लेश के कारण आप अपने जीवन से निराश हो सकते हैं। आप आत्मविश्वास खो सकते हैं, जिससे आप मानसिक तनाव में रहेंगे। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पहले ही उसके असफल होने का भय आप पर हावी हो सकता है और उस काम को आप ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। अपने अन्दर आत्मविश्वास बनाकर रखें। अपने निकटतम लोगों से परामर्श लें। कोई नया काम शुरू ना करें तथा ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे परिवार या समाज में हानि एवं अपमान का भय हो।

himalayavedicworld.com

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –मिथुन

Start -31:05:2032

End -13:07:2034

Duration -2 y.1 m.12 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। इस चरण के प्रारम्भ में ही किसी उंचे तबके के व्यक्ति या पुलिस अधिकारी से आपकी अनबन हो सकती है। उनके माध्यम से बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। किसी मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए सपरिवार यात्रा कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सचेत रहें, चोरी के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। किसी अन्य कारण से आपका अपमान भी हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, लेकिन इसी समाचार के कारण अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद हो सकता है। परिवार में किसी विवाद के कारण धन–संपत्ति की हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो अचानक किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जहां हानि होने की काफी संभावना है। कोई नई योजना ना बनायें, असफल हो सकते हैं। आपकी असफलता में आपके परिवार का ही अप्रत्यक्ष हाथ हो सकता है। अपनी असफलता के कारण आप मानसिक तनाव में आ सकते हैं। नौकरी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। अपनी जिम्मेदारी सावधानी से निभायें, अन्यथा संकट में फँस सकते हैं।

यदि आपकी नौकरी या व्यवसाय का कोई मामला अदालत में चल रहा है, तो आपको हानि हो सकती है। ऐसे किसी कार्य को टालना ही बेहतर होगा। आपका कोई विशेष कार्य सिद्ध हो सकता है। इसके लिए भारी विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। वाहन के प्रति सावधानी बरतें, चोरी का खतरा है। कोई नई योजना ना बनायें, आर्थिक हानि हो सकती है। इसके लिए आपके परिवार में भी विवाद हो सकता है। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु 38 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपकी माता के जीवन को खतरा हो सकता है। अपनी संतान की बीमारी पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है।

इस चरण के दौरान अपनी मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपके सामने व्यर्थ के खर्चे अधिक हो सकते हैं, जिनसे आप मानसिक तनाव महसूस कर सकते हैं। भोग–विलास की वस्तुएं खरीदने में अधिक खर्च कर सकते हैं, लेकिन बाद में पछतावा हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर में तनाव या झगड़े का असर आपके काम पर पड़ सकता है। चरण के अंतिम समय में की गई यात्रा लाभदायक साबित हो सकती है। किसी भी तरह की संपत्ति के विवाद से दूर रहें, अन्यथा आपको हानि के साथ–साथ उलझन भी हो सकती है। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। शुभ कार्य के साथ–साथ कोई अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है। आपके प्रयासों से कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो चरण के अंतिम 6 महिनों में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आपके घर में ही आपके कार्यों का विरोध हो सकता है, लेकिन घर के बाहर आपको सम्मान प्राप्त होगा।

इस चरण के दौरान अपने जीवनसाथी एवं माता–पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके माता–पिता को नेत्र संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है। अपनी सावधानी से आप दुर्घटना से बच सकते हैं। अपने ही किसी आदमी, जिसे आप हितैषी समझते हैं, के कारण आपको कोई बड़ी हानि हो सकती है। अपने दाम्पत्य जीवन पर ध्यान दें। परायी स्त्रियों से दूर रहें, अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन की शांति भंग हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि सातवें भाव का स्वामी पाप प्रभाव में है, तो आपका दाम्पत्य जीवन खतरे में आ सकता है।

himalayavedicworld.com

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

इस चरण के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकता है। हालांकि, आपको शुभ फल कम और अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। इस चरण के दौरान आपकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा हो सकता है। संभव है, कि आपके पिता आपसे अधिक संपत्ति आपके भाईयों के नाम पर कर दें। धन के मामलें में सावधानी बरतें। कहीं भी काफी सोच–समझ कर ही धन खर्च करें, अन्यथा हानि हो सकती है। आप कोई लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं। यात्रा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। किसी महिला से संपर्क में आ सकते हैं, जिनसे आर्थिक लाभ हो सकता है।

एक तरफ जंहा आप आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर खर्चों से भी परेशान रह सकते हैं। पूजा–पाठ में मन लगायें। आने वाले समय में आप भीषण संकट में आ सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके सामने व्यापार के नये मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायियों के षडयंत्र के कारण आप कोई आपूर्ति समय पर करने में असफल हो सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है एवं आपका अपमान भी हो सकता है। अपनी योजनायं गुप्त रखें, तभी आप सफल हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपका तबादला हो सकता है।

आपको अपनी संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। आपको अचानक कोई बड़ा खर्च करना पड़ सकता है। इस चरण के दौरान आप काफी व्यस्त रहेंगे, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं होगा। आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। कोई मांगलिक कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। अपने किसी रिश्तेदार के कारण किसी भूमि विवाद का सामना करना पड़ सकता है। आपका निवास परिवर्तन हो सकता है। किसी महिला से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने कार्यों में होने वाली देरी से मन में बेचैनी रह सकती है। असफलताओं के कारण आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –कुम्भ

Start -25:02:2052

End -14:05:2054

himalayavedicworld.com

Duration -2 y.2 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -02:09:2054

End -05:02:2055

Duration -0 y.5 m.4 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण के प्रारम्भ में ही आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशांत रह सकते हैं एवं आर्थिक हानि भी हो सकती है। आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है। अपनी पूर्ण कोशिश के बावजूद भी खर्च पर नियंत्रण करने में असफल हो सकते हैं। धर्म एवं आध्यात्म की ओर आपका रूझान होगा। आप धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपना अड़ियल रवैया त्यागने का प्रयत्न करें। आप थोड़े जिद्दी हो सकते हैं। यदि कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप काफी उत्तेजित एवं क्रोधित हो सकते हैं।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो अपने क्रोधित एवं अड़ियल स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का विरोध सह सकते हैं। घरेलू जिन्दगी में भी छोटी–छोटी बातों पर झगड़े हो सकते हैं। अपनी अलाचनाओं के कारण आप काफी परेशान रह सकते हैं। आपको अपने परिवार से मदद नहीं मिल सकती है। आपकी सहनशक्ति खत्म हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर काफी उत्तेजित हो सकते हैं। किसी के द्वारा समझाये जाने पर उसका अपमान कर सकते हैं एवं झगड़ा भी कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण के दौरान आपको हानि हो सकती है। आपका भुगतान रूक सकता है। व्यापार जगत में आपकी बदनामी हो सकती है। आपके व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपको अपना व्यवसाय बचाने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने व्यवसाय में गोपनीयता ना रखने के कारण आपको अधिक हानि हो सकती है। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने में काफी सफल हो सकते हैं।

नित्य आने वाली समस्याओं के कारण आप व्यसन की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपको व्यसन की लत डलवाकर आपके पैसे पर ऐश कर सकते हैं। किसी भी तरह की नशा करने पर आपकी स्थिति और अधिक खराब हो सकती है। आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा कर सकते हैं, लेकिन आपको किसी तरह का लाभ होने की संभावना नहीं है। इस चरण के दौरान आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रारम्भ में आपको हानि हो सकती है, लेकिन बहुत शीघ्र आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। मशीनरी एवं चिकित्सा संबंधी कार्य आपको लाभ दे सकते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बढ़िया संपर्क बनाकर रखें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -14:05:2054

End -02:09:2054

Duration -0 y.3 m.19 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:02:2055

himalayavedicworld.com

End -07:04:2057

Duration -2 y.2 m.0 d.

इस चरण में आपको अधिकांशतः अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप आर्थिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हांलाकि, आप काफी मेहनत करेंगे, लेकिन अंतिम परिणाम निराशाजनक को सकता है। आप अपने राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हैं, लेकिन अपने क्रोधी स्वभाव के एवं कठोर वाणी के कारण उसमें सफल नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आप अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। आप आलसी हो सकते हैं। आपके छोट भाई– बहन को भी कुछ कष्ट हो सकता है। धर्म एवं आध्यात्म में आपकी रूचि हो सकती है। आप ज्योतिष या किसी गुप्त विद्या की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। किसी ढोंगी तांत्रिक के चक्कर में आकर आर्थिक हानि के साथ–साथ शारीरिक कष्ट भी उठा सकते हैं। अपने रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। उनके साथ तनाव होने की संभावना है, जिसके कारण आपके संबंध खराब हो सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन पर उचित ध्यान दें। ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे आपके जीवनसाथी को ठेस लगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। नित्य ही एक नई समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी नाखुश हो सकते हैं।

आपके अधिनस्थ कर्मचारी एवं सहकर्मी आपके प्रति बैर भाव रख सकते हैं। उनके विरोध के कारण आपका स्थानान्तरण हो सकता है। यदि व्यवसाय करते हैं, तो आपको सत्तापक्ष से सावधान रहना चाहिए। अपने व्यवसाय के हिसाब–किताब को ठीक रखें। अपना कर समय पर चुकाते रहें। आपके प्रतिद्वन्द्वी आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने व्यवसाय को नया रूप देने के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विशेषकर साझेदारी में। आपको धोखा तथा तनाव मिल सकता है। हर तरह के गलत कार्य से दूर रहें, अन्यथा उलझन में फँस सकते हैं।

अचानक होने वाली हानि के कारण आप अधिक क्रोधित हो सकते हैं एवं अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं, जिससे आपको अधिक हानि हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। अपने जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक यात्रा कर सकते हैं। कोई भी काम काफी सोच–समझकर करें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। आपके शत्रु मौके की तलाश में हो सकते हैं, कहीं धन निवेश एवं उधार देने से बचें, आपका पैसा डूब सकता है। मानसिक अशांति के कारण अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, अन्यथा किसी बड़ी समस्या में पड़ सकते हैं। आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

तृतिय द्वैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

इस चरण में आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है तथा आपका क्रोध बढ़ सकता है, जिसकी वजह से आपको हानि हो सकती है। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और सभी के साथ आपका व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो सकता है। आप हर बात में अपना स्वार्थ चाहेंगे, जिससे आपकी छवि खराब हो सकती है। आपके प्रति सभी का व्यवहार बदल सकता है। अपने खान–पान पर आपका नियंत्रण नहीं हो सकता है, जिससे आपको अपच एवं उदर विकार हो सकता है। मुख एवं गले के रोग होने की संभावना है।

himalayavedicworld.com

यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप पर दोषारोपण हो सकता है, जिसकी वजह से आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी जा सकती है। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने की आपकी सारी योजनाएं विफल हो सकती हैं। योजना शुरू करने के हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपनी कोई अचल संपत्ति भी बेचनी पड़ सकती है। आपको समस्या मुक्त करने के लिए आपकी माता या मौसी आर्थिक मदद करना चाह सकती हैं, लेकिन आप अपने व्यवहार से यह मौका गवां सकते हैं। आप खुद अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं, जो कि विफल हो सकता है। आप छोटी–छोटी समस्याओं से भी घबरा सकते हैं। आप पैतृक संपत्ति से वंचित हो सकते हैं। यदि संपत्ति संबंधित कोई विवाद अदालत में चल रहा हो, तो उसे टालने का प्रयत्न करें, आपके खिलाफ फैसला हो सकता है।

भवन निर्माण संबंधी आपकी योजना विफल हो सकती है। आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। दूसरे अन्य कार्यों में मिली–जुली सफलता मिल सकती है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद आप भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने का प्रयास कर सकते हैं। आर्थिक तंगी होने के बाद भी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं, जिसके लिए बाद में पछतावा हो सकता है। परिवार में होने वाले क्लेश के कारण मानसिक कष्ट हो सकता है।

आपको अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। संतान से कष्ट, कार्य में असफलता एवं हानि तथा परिवार में क्लेश के कारण आप अपने जीवन से निराश हो सकते हैं। आप आत्मविश्वास खो सकते हैं, जिससे आप मानसिक तनाव में रहेंगे। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पहले ही उसके असफल होने का भय आप पर हावी हो सकता है और उस काम को आप ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। अपने अन्दर आत्मविश्वास बनाकर रखें। अपने निकटतम लोगों से परामर्श लें। कोई नया काम शुरू ना करें तथा ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे परिवार या समाज में हानि एवं अपमान का भय हो।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –मिथुन

Start -11:07:2061

End -13:02:2062

Duration -0 y.7 m.4 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -07:03:2062

End -24:08:2063

Duration -1 y.5 m.18 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। इस चरण के प्रारम्भ में ही किसी उंचे तबके के व्यक्ति या पुलिस अधिकारी से आपकी अनबन हो सकती है। उनके माध्यम से बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। किसी मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए सपरिवार यात्रा कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सचेत रहें, चोरी के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। किसी अन्य कारण से आपका अपमान भी हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, लेकिन इसी समाचार के कारण अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद हो सकता है। परिवार

himalayavedicworld.com

में किसी विवाद के कारण धन–संपत्ति की हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो अचानक किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जहां हानि होने की काफी संभावना है। कोई नई योजना ना बनायें, असफल हो सकते हैं। आपकी असफलता में आपके परिवार का ही अप्रत्यक्ष हाथ हो सकता है। अपनी असफलता के कारण आप मानसिक तनाव में आ सकते हैं। नौकरी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। अपनी जिम्मेदारी सावधानी से निभायें, अन्यथा संकट में फँस सकते हैं।

यदि आपकी नौकरी या व्यवसाय का कोई मामला अदालत में चल रहा है, तो आपको हानि हो सकती है। ऐसे किसी कार्य को टालना ही बेहतर होगा। आपका कोई विशेष कार्य सिद्ध हो सकता है। इसके लिए भारी विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। वाहन के प्रति सावधानी बरतें, चोरी का खतरा है। कोई नई योजना ना बनायें, आर्थिक हानि हो सकती है। इसके लिए आपके परिवार में भी विवाद हो सकता है। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु 38 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपकी माता के जीवन को खतरा हो सकता है। अपनी संतान की बीमारी पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है।

इस चरण के दौरान अपनी मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपके सामने व्यर्थ के खर्चे अधिक हो सकते हैं, जिनसे आप मानसिक तनाव महसूस कर सकते हैं। भोग–विलास की वस्तुएं खरीदने में अधिक खर्च कर सकते हैं, लेकिन बाद में पछतावा हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर में तनाव या झगड़े का असर आपके काम पर पड़ सकता है। चरण के अंतिम समय में की गई यात्रा लाभदायक साबित हो सकती है। किसी भी तरह की संपत्ति के विवाद से दूर रहें, अन्यथा आपको हानि के साथ–साथ उलझन भी हो सकती है। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। शुभ कार्य के साथ–साथ कोई अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है। आपके प्रयासों से कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो चरण के अंतिम 6 महिनों में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आपके घर में ही आपके कार्यों का विरोध हो सकता है, लेकिन घर के बाहर आपको सम्मान प्राप्त होगा।

इस चरण के दौरान अपने जीवनसाथी एवं माता–पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके माता–पिता को नेत्र संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है। अपनी सावधानी से आप दुर्घटना से बच सकते हैं। अपने ही किसी आदमी, जिसे आप हितैषी समझते हैं, के कारण आपको कोई बड़ी हानि हो सकती है। अपने दाम्पत्य जीवन पर ध्यान दें। परायी स्त्रियों से दूर रहें, अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन की शांति भंग हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि सातवें भाव का स्वामी पाप प्रभाव में है, तो आपका दाम्पत्य जीवन खतरे में आ सकता है।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -04:11:2070

End -05:02:2073

Duration -2 y.3 m.2 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -31:03:2073

End -23:10:2073

Duration -0 y.6 m.23 d.

इस चरण के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकता है। हालांकि, आपको शुभ फल कम और अशुभ

himalayavedicworld.com

फल अधिक प्राप्त हो सकता है। इस चरण के दौरान आपकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा हो सकता है। संभव है, कि आपके पिता आपसे अधिक संपत्ति आपके भाईयों के नाम पर कर दें। धन के मामलें में सावधानी बरतें। कहीं भी काफी सोच–समझ कर ही धन खर्च करें, अन्यथा हानि हो सकती है। आप कोई लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं। यात्रा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। किसी महिला से संपर्क में आ सकते हैं, जिनसे आर्थिक लाभ हो सकता है।

एक तरफ जंहा आप आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर खर्चों से भी परेशान रह सकते हैं। पूजा–पाठ में मन लगायें। आने वाले समय में आप भीषण संकट में आ सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके सामने व्यापार के नये मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायियों के षडयंत्र के कारण आप कोई आपूर्ति समय पर करने में असफल हो सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है एवं आपका अपमान भी हो सकता है। अपनी योजनायं गुप्त रखें, तभी आप सफल हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपका तबादला हो सकता है।

आपको अपनी संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। आपको अचानक कोई बड़ा खर्च करना पड़ सकता है। इस चरण के दौरान आप काफी व्यस्त रहेंगे, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं होगा। आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। कोई मांगलिक कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। अपने किसी रिश्तेदार के कारण किसी भूमि विवाद का सामना करना पड़ सकता है। आपका निवास परिवर्तन हो सकता है। किसी महिला से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने कार्यों में होने वाली देरी से मन में बेचैनी रह सकती है। असफलताओं के कारण आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको

himalayavedicworld.com

यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि–नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र– पिप्पलाद के अनुसार–

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि –

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

मीन राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय–

1– पीपल एवं केले के वृक्ष की सेवा करें।

2– शनि आराधना करें।

3– नियमित रूप से शिव चालीसा के साथ शनि चालीसा का पाठ करें।

4– वृद्धों को सम्मान दें।

5– स्नान के जल में पिसी हल्दी का चूर्ण तथा काले तिल डालकर नहायें।

himalayavedicworld.com

6– रात में सोते समय नेत्रों में काले सूरमें का प्रयोग अवश्य करें।

7– शनिवार का व्रत करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा–अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1– शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक–बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3– काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4–यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5– शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6– मद्यपान ना करें।

7– शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8– भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9– शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10– शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11– नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12– प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

himalayavedicworld.com

13– प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14– शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15– अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16– प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक–एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17– आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18– पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19– शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20– प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक

himalayavedicworld.com

पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21– शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22– किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23– मांस–मदिरा से दूर रहें।

24– किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25– घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26– काले वस्त्र धारण करें।

27– घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28– शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29– काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30– शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31– शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32– साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33– रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34– नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

himalayavedicworld.com

35– शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36– किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37– शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38– प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39– अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40– अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

himalayavedicworld.com

वैदिक वर्षफल (51)

(18:01:2025 To 17:01:2026)

Name - Sample

Date - 18/01/1975 Time - 17:30:00

POB - Ballia (Uttar Pradesh) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Himalaya Vedic World

Phone +91-7465839601

himalayavedicworld.com

मुख्य विवरण	
लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 जनवरी 1975
जन्म समय	17:30:00
जन्म दिन	शनिवार
जन्म स्थान	Ballia
राज्य	Uttar Pradesh
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	17:36:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	25:25:46 hrs
इष्ट काल	26: 54: 22 Ghati

अवकहड़ा चक्र	
पाया	रजत
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	गौ (स्त्री)
गण	मनुष्य
नाड़ी	मध्य
रज्जु	कटि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	गुरू
विहग	मयुर
नाड़ी पद	आदि
वेध	पुर्वफाल्गुनी
आद्याक्षर	जन
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:30:31

वर्षफल विवरण (51)

18:01:2025 - 17:01:2026

वर्ष प्रवेश दिन	18:01:2025
वर्ष प्रवेश समय	01:15 PM

जन्मलग्न अधिपति चन्द्रमा	वर्षलग्न अधिपति शुक्र (9.01)	वर्षेश्वर शनि
मुन्थापति बुध (12.66)	दिवारात्रि पति शनि (12.24)	त्रिराशि पति शुक्र (9.01)

himalayavedicworld.com

अगामी 12 मास के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु

शुभ बिन्दु

शनिवार, बुधवार, रविवार शुभ दिन	शनि, बुध, सूर्य शुभ ग्रह	वृश्चिक, कुम्भ, मेष, मिथुन मित्र राशि
सिहं, वृश्चिक, मकर, मीन मित्र लग्न	हीरा शुभ रत्न	तुंक, हीरा, कसला, सीम्मा, शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	विष्णु अनुकूल देवता	रजत शुभ धातु
पीत शुभ रंग	दक्षिणपूर्व दिशा	सूर्योदय शुभ समय
मिसरी, सुगंधी, दही, रक्तचंदन शुभ पदार्थ	चावल शुभ अन्न	दूध शुभ द्रब्य

अशुभ बिन्दु

ज्येष्ठा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मकर अशुभ राशि	मकर अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
मूला अशुभ नक्षत्र	प्रीति अशुभ योग	बल्लव अशुभ करन

himalayavedicworld.com

वर्षफल विवरण

18:01:2025 - 17:01:2026

जन्म कुण्डली

Star (Pada)	Degree	Sign	Planet
पुष्य (1)	06:01:18	कर्क	लग्न
उत्तराषाढ़ (3)	04:15:20	मकर	सूर्य
उत्तरभाद्र (3)	10:26:34	मीन	चन्द्रमा
मूला (2)	04:05:31	धनु	मंगल
श्रवण (4)	21:33:24	मकर	बुध
पूर्वाभाद्र (1)	23:01:11	कुम्भ	गुरू
श्रवण (4)	21:48:04	मकर	शुक्र
पुनर्वसु (1)	20:55:44	मिथुन	शनि
अनुराधा (4)	14:09:24	वृश्चिक	राहु
रोहिणी (2)	14:09:24	वृष	केतु

वर्षफल कुण्डली

Sign	Degree	Star (Pada)
वृष	06:37:31	कृतिका (3)
मकर	04:15:20	उत्तराषाढ़ (3)
सिहं	25:51:18	पुर्वफाल्गुनी (4)
कर्क	01:07:18	पुनर्वसु (4)
धनु	20:23:11	पूर्वाषाढ़ (3)
वृष	17:34:02	रोहिणी (3)
कुम्भ	21:10:56	पूर्वाभाद्र (1)
कुम्भ	21:48:45	पूर्वाभाद्र (1)
मीन	06:22:23	उत्तरभाद्र (1)
कन्या	06:22:23	उत्तरफाल्गुनी (3)

जन्म लग्न कुण्डली

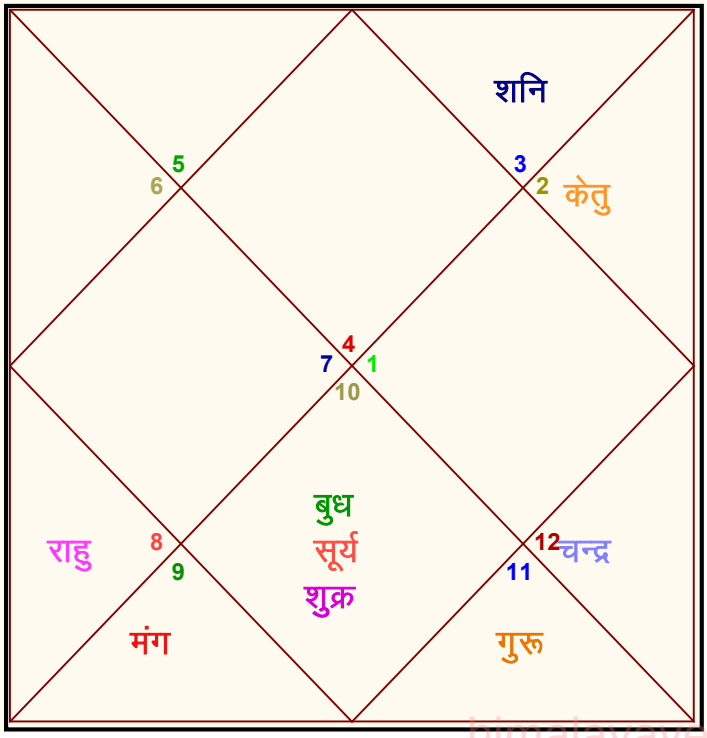

वर्षफल लग्न कुण्डली

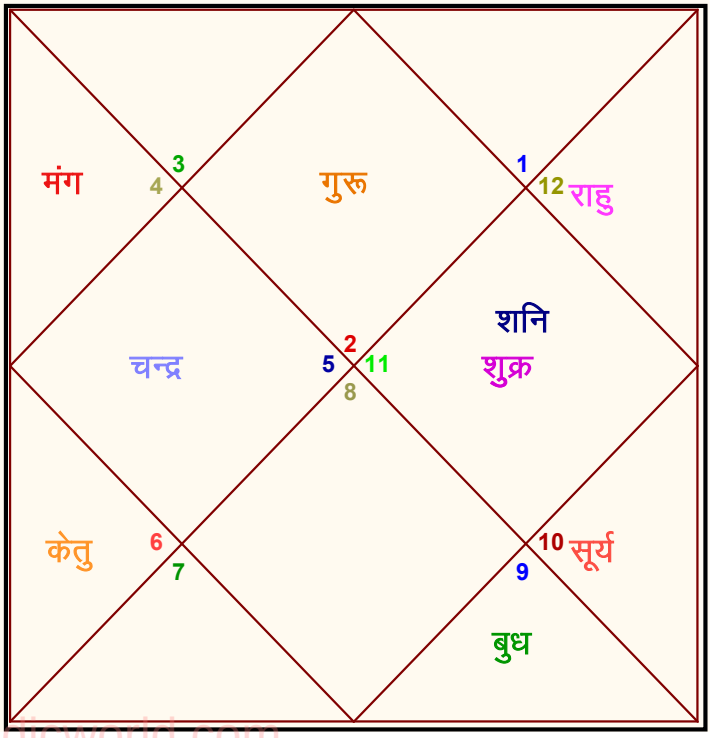

himalayavedicworld.com

वर्षफल विवरण (51)

18:01:2025 - 17:01:2026

जन्म कुण्डली

वर्षफल कुण्डली

जन्म चन्द्र कुण्डली

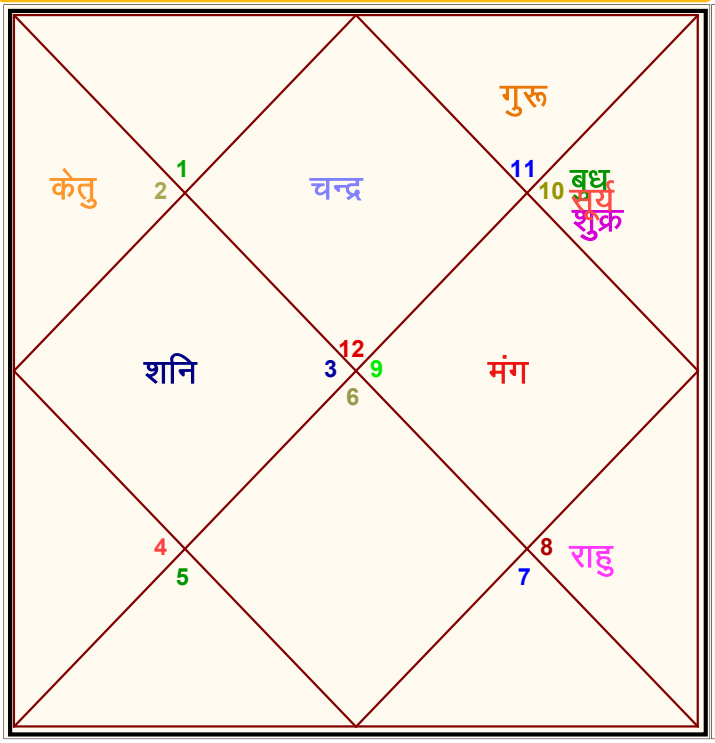

वर्षफल चन्द्र कुण्डली

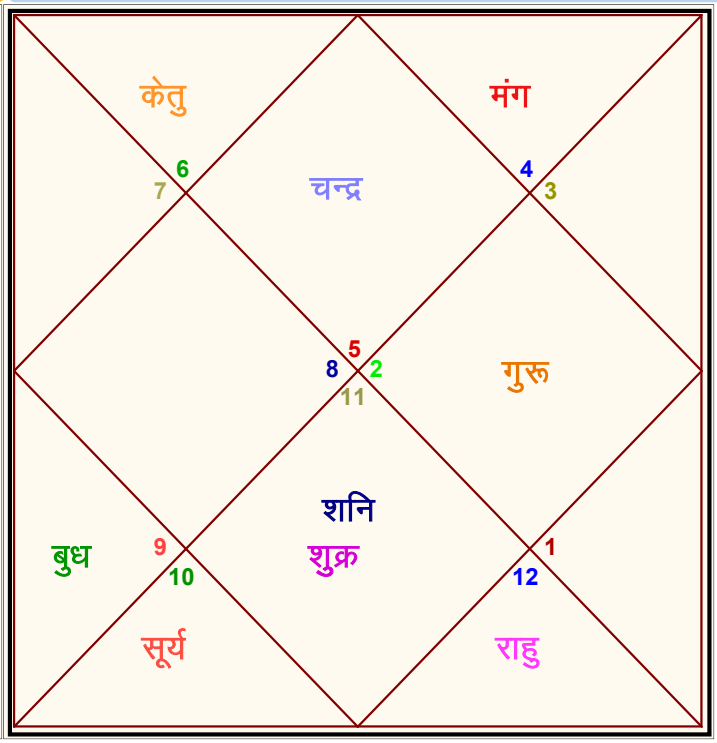

जन्म नवांश कुण्डली

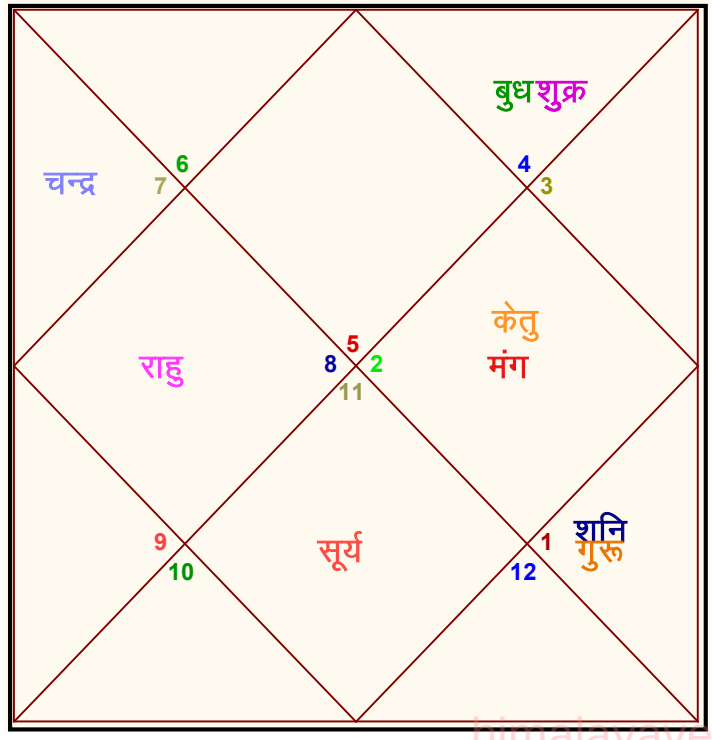

वर्षफल नवांश कुण्डली

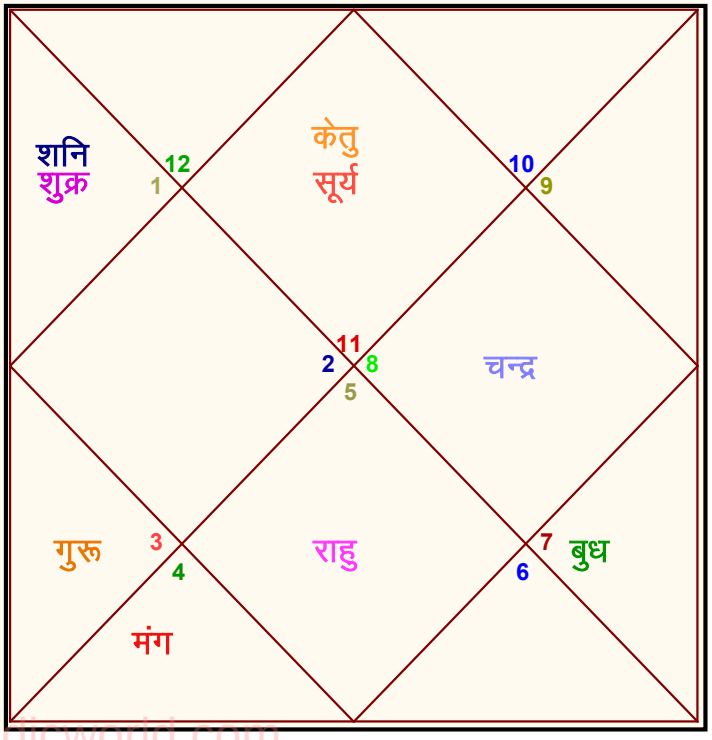

himalayavedicworld.com

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर शनि है। अतः यह वर्ष आपके लिए कुछ–कुछ समस्यात्मक हो सकता है। आपका स्वास्थ्य अथवा मिजाज उत्तम नहीं रह सकता है। आप अपने व्यवसाय में एक अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं अथवा आप असफलता या निराशा के कारण अप्रसन्न हो सकते हैं। आपके कुछ नए परिचितों के कारण आपको दुख हो सकता है तथा प्रबल संभावना है कि वह व्यक्ति विपरीत लिंग का हो सकता है। सुखद पक्ष यह है कि आप एक नया लाभप्रद रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा नया व्यापार या कार्यशाला/कारखाना शुरू कर सकते हैं। किसी भिन्न समुदाय या धर्म तथा दूरस्थ स्थान से संबंधित या निवास करने वाले किसी व्यक्ति के संपर्क में आ सकते हैं और उससे कोई अवसर प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि आपको कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता हो सकती है, फिर भी आपके पद और पारिश्रमिक में वृद्धि होगी तथा साथ ही आपका जीवन स्तर भी ऊँचा होगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था पांचवें में स्थित है। अतः यह बहुत अनुकूल स्थिति है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों से समर्थन प्राप्त होगा एवं सरकारी स्रोतों से भी लाभ प्राप्त होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मनोरंजक स्थानों का भ्रमण करेंगे, रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहेंगे एवं मनोंरजन के क्षेत्रों से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आपके ज्ञान व बुद्धिमता में वृद्धि होगी एवं आपकी संतानों की समृद्धि आपकी खुशियों में बढ़ोत्तरी करेगा। आप कुछ पवित्र कर्म करेंगे एवं धर्मार्थ गतिविधियों में भाग लेंगे।

महत्वपूर्ण समयान्तर

चन्द्रमा दशा
18:01:2025 To
16:02:2025

मंगल दशा
17:02:2025 To
10:03:2025

राहु दशा
11:03:2025 To
04:05:2025

गुरू दशा
05:05:2025 To
21:06:2025

शनि दशा
22:06:2025 To
18:08:2025

बुध दशा
19:08:2025 To
09:10:2025

केतु दशा
10:10:2025 To
30:10:2025

शुक्र दशा
31:10:2025 To
30:12:2025

सूर्य दशा
31:12:2025 To
17:01:2026

himalayavedicworld.com

चन्द्रमा का समय (18:01:2025 – 16:02:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि के दौरान भावनात्मक स्वास्थ्य आपकी प्राथमिकता होने की संभावना है। आप अधिक संवेदनशील और सहज महसूस कर सकते हैं, लेकिन मानसिक अस्थिरता और भावनात्मक अशांति का शिकार अधिक होने की संभावना है। अपने भावनात्मक स्वास्थ्य का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है, जो आपके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डाल सकता है।

शैक्षणिक भविष्य

इस समयावधि में आप महसूस कर सकते हैं कि आपका ध्यान पारंपरिक शैक्षणिक गतिविधियों के बजाय व्यक्तिगत विकास और उन्नति पर अधिक है। आप मनोविज्ञान, आध्यात्मिकता या व्यक्तिगत विकास से संबंधित विषयों के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके करियर के लिए विशेष रूप से अनुकूल नहीं है, क्योंकि आपका ध्यान व्यक्तिगत एवं पारिवारिक मामलों पर केंद्रित रहने की संभावना है। हालांकि, आपको लग सकता है कि आप घर से काम करते हुए अथवा अपने घर या परिवार से संबंधित योजनाओं पर कार्य करते हुए अधिक उत्पादक व सफल हैं।

आर्थिक गतिविधि

इस समयावधि के दौरान, आप वित्तीय स्थिरता और स्थिर आय का अनुभव कर सकते हैं। हालाँकि, आपके घर या परिवार से संबंधित कुछ अप्रत्याशित खर्चे हो सकते हैं, जिसके लिए आपको अपने वित्तीय मामलों में अधिक सावधान रहने की आवश्यकता हो सकती है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यदि आप एक प्रतिबद्ध रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, तो यह समयावधि आपके साथी के साथ भावनात्मक जुड़ाव और गहरी अंतरंगता का समय हो सकता है। यदि आप अविवाहित हैं, तो आप भावनात्मक सुरक्षा और एक स्थिर, दीर्घकालिक संबंध की प्रबल इच्छा महसूस हो सकती है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

इस समयावधि में पारिवारिक रिश्ते प्रमुख केन्द्र–बिन्दु बन जाते हैं। आप अपने परिवार के सदस्यों के साथ अधिक समय बिता सकते हैं, और अपने घर और जड़ों से अधिक जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। कुछ भावनात्मक उतार–चढ़ाव हो सकते हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह पारिवारिक बंधन को मजबूत करने का समय है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह भावनात्मक बंधन और पोषण का समय हो सकता है। आप अपने बच्चों से अधिक जुड़ाव महसूस कर सकते हैं और उनकी भावनात्मक भलाई का समर्थन करने के नए तरीके खोज सकते हैं। यदि आपके बच्चे नहीं हैं, तो आप अपने जीवन में दूसरों का पोषण और देखभाल करने की प्रबल इच्छा महसूस कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

यह यात्रा के लिए विशेष रूप से अनुकूल समय नहीं है, विशेष रूप से लंबी दूरी की यात्रा। आप घर के करीब रहने और घरेलू मामलों पर ध्यान देने के इच्छुक हो सकते हैं।

युक्तियाँ और सलाह

इस अवधि के दौरान, अपने भावनात्मक कल्याण और अपने परिवार के सदस्यों की भलाई को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। अपने घर और घरेलू मामलों का ध्यान रखें, और उन लोगों के साथ गहरे भावनात्मक संबंध बनाने पर ध्यान दें जिन्हें आप प्यार करते हैं। यह व्यक्तिगत विकास, आत्म–प्रतिबिंब और भावनात्मक उपचार का समय है।

himalayavedicworld.com

मंगल का समय (17:02:2025 – 10:03:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

यह समयावधि बताती है कि आप बाहों, कंधों या श्वसन प्रणाली से संबंधित कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव कर सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना और यदि आवश्यक हो तो चिकित्सा पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। नियमित व्यायाम और एक स्वस्थ आहार भी आपके समग्र स्वास्थ्य के सुधार में मदद कर सकता है।

शैक्षणिक भविष्य

यह समयावधि आपकी शैक्षिक गतिविधियों के लिए अनुकूल हो सकती है। आप अपने शैक्षणिक लक्ष्यों में अधिक एकाग्रचित्त और दृढ़ महसूस कर सकते हैं, और अपनी पढ़ाई में महत्वपूर्ण प्रगति प्राप्त कर सकते हैं। अनुशासित रहना और ध्यान भंग होने से बचना महत्वपूर्ण है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके व्यावसायिक जीवन में उन्नति व विकास के लिए उत्तम हो सकता है। आपको उन्नति के नए अवसर मिल सकते हैं तथा आपको अपने संचार व संपर्क कौशल में सुधार के लिए कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है। एकाग्रचित्त और अनुशासित रहना महत्वपूर्ण है एवं साथ ही सहकर्मियों के साथ किसी भी विवाद में पड़ने से बचें।

आर्थिक गतिविधि

यह समयावधि संचार और नेटवर्किंग के माध्यम से वित्तीय विकास के लिए कुछ अवसर ला सकती है। आप संवाद करने और प्रभावी ढंग से बातचीत करने की अपनी क्षमता से लाभान्वित हो सकते हैं। हालांकि, अपने खर्च के साथ बहुत अधिक आवेगी होने से बचना और भविष्य के लिए बचत पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि आपके प्रेम और वैवाहिक जीवन में कुछ चुनौतियाँ ला सकती है। आप अपने साथी के साथ संघर्ष या बहस का अनुभव कर सकते हैं, और संवाद और आपसी समझ को बेहतर बनाने के लिए काम करने की आवश्यकता हो सकती है। अनावश्यक टकराव से बचना और संवेदनशीलता और सम्मान के साथ अपने रिश्तों को निभाना महत्वपूर्ण है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

यह समयावधि संवाद में सुधार लाने और अपने परिवार के सदस्यों के साथ मजबूत संबंध बनाने के लिए एक उत्तम समय हो सकता है। आपको अपनी बातचीत में अधिक समझदार और धैर्यवान होने का प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। अनावश्यक विवादों या टकराव से बचना महत्वपूर्ण है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह समय अवधि उनके साथ कुछ संघर्ष या बहस ला सकती है। अपने रिश्तों को संवेदनशीलता और सम्मान के साथ निभाना महत्वपूर्ण है, और अनावश्यक टकराव में पड़ने से बचें। यह अपने बच्चों के साथ संवाद में सुधार पर काम करने और मजबूत संबंध बनाने के लिए एक अच्छा समय है।

यात्रा/ भ्रमण

यह समयावधि छोटी दूरी की यात्रा के अवसर ला सकती है। यह नए स्थानों का पता लगाने और नई संस्.तियों का अनुभव करने का एक अच्छा समय है, लेकिन अपनी यात्रा की सावधानी से योजना बनाना और एक सुरक्षित और सुखद अनुभव सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है।

युक्तियाँ और सलाह

यह प्रगति और विकास की समयावधि है, विशेष रूप से आपके संचार और नेटवर्किंग कौशल में। ध्यान केंद्रित रखना और अनुशासित रहना महत्वपूर्ण है, तथा किसी भी अनावश्यक विवाद या बहस में पड़ने से बचें। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और यदि आवश्यक हो तो चिकित्सकीय सलाह लें। अपने रिश्तों में संवेदनशीलता और सम्मान के साथ पेश आएं, तथा संचार को बेहतर बनाने और अपने प्रियजनों के साथ मजबूत संबंध बनाने पर काम करें।

himalayavedicworld.com

राहु का समय (11:03:2025 – 04:05:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि में अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि राहु अप्रत्याशित स्वास्थ्य समस्याएं ला सकता है। अपनी शारीरिक और मानसिक सेहत का ध्यान रखें, और अवकाश लेना सुनिश्चित करें और नियमित रूप से स्वयं के देखभाल का अभ्यास करें।

शैक्षणिक भविष्य

यह समय अवधि आपके ज्ञान और कौशल में वृद्धि और विस्तार की क्षमता के साथ शिक्षा या सीखने के लिए नए अवसर ला सकती है। अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित रखना और अनुशासित रहना महत्वपूर्ण है, और विकर्षण या शिथिलता से विचलित होने से बचें।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

इस समयावधि में नए अवसरों और पहचान में वृद्धि के साथ, आपके पेशेवर जीवन में वृद्धि हो सकती है। आपको सहकर्मियों और वरिष्ठों से समर्थन और सहयोग प्राप्त हो सकता है, लेकिन सावधान रहें कि सीमाओं को पार न करें य बहुत जल्दी महत्वाकांक्षी न हो जाएं।

आर्थिक गतिविधि

आप कुछ अप्रत्याशित लाभ और वित्तीय अवसर प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन सावधान रहें कि आवेगपूर्ण निर्णय न लें। आपकी आय में कुछ अस्थिरता हो सकती है, लेकिन कुल मिलाकर, आप अपनी वित्तीय स्थिति में कुछ सकारात्मक बदलाव और विकास की उम्मीद कर सकते हैं।

विवाह/प्रेम/रोमांस

आपके प्रेम संबंध में कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन और उतार–चढ़ाव हो सकते हैं, नए रोमांटिक अवसर खुद को पेश कर रहे हैं। हालाँकि, सतर्क रहना और जल्दबाजी में निर्णय न लेना महत्वपूर्ण है। प्रतिबद्ध रिश्ते में रहने वालों के लिए, यह संवाद और अंतरंगता में सुधार पर काम करने के लिए एक अच्छा समय हो सकता है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

इस सम्यावधि में आप प्रियजनों के साथ उत्पव्न होने वाले तनाव या टकरावों के साथ–साथ, अपने पारिवारिक जीवन के कुछ चुनौतियों का अनुभव भी कर सकते हैं। धैर्य और समझदारी का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है, और सामान्य समाधान खोजने की कोशिश करें। कोई भी आवेगी या कठोर निर्णय लेने से बचें जो आपके रिश्तों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह सम्यावधि उनके जीवन में कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन या चुनौतियाँ ला सकती है। सहायक और समझदार होना और किसी भी समस्या का समाधान खोजने के लिए उनके साथ काम करना महत्वपूर्ण है।

यात्रा/ भ्रमण

इस सम्यावधि में क्षितिज पर नए अनुभवों और रोमांच के साथ,यात्रा और अन्वेषण के अवसर हो सकते हैं। हालांकि, अपनी यात्राओं की योजना बनाते सम्य सावधान रहें और अधिक खर्च न करें या आवेगपूर्ण निर्णय न लें।

युक्तियाँ और सलाह

यह सम्यावधि अप्रत्याशित अवसर और विकास ला सकती है, लेकिन जमीन पर टिके रहना और बहुत अधिक दूर न निकल जाना महत्वपूर्ण है। सावधानी और अनुशासन का अभ्यास करें, और आवेगपूण निर्णय लेने से बचें, जिसके नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। अपने रिश्तों और अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, और अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों पर केंद्रित रहें।

himalayavedicworld.com

गुरू का समय (05:05:2025 – 21:06:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

यह समयावधि अच्छे स्वास्थ्य का संकेत देती है। हालाँकि, आपको एक स्वस्थ जीवन शैली और सकारात्मक आदतों को शामिल करके अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप किसी प्रकार की आध्यात्मिक साधना पर भी विचार कर सकते हैं, जैसे ध्यान या योग अपने दिमाग को शांत और केंद्रित रखने के लिए।

शैक्षणिक भविष्य

यदि आप एक छात्र हैं, तो बृहस्पति शिक्षा और सीखने के लिए एक उत्तम समयावधि को दशौता है। आप नई अवधारणाओं को जल्दी से समझ पाएंगे और अपनी पढ़ाई में उत.ष्टता प्राप्त कर सकेंगे। उच्च शिक्षा या किसी विशेष पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए भी यह एक अच्छा समय है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके करियर में वृद्धि और सफलता ला सकती है। आपको अपने कठिन परिश्रम और प्रयासों के लिए पहचाना जा सकता है, और अपने वरिष्ठों एवं सहकर्मियों से सराहना प्राप्त हो सकती है। यह एक नया व्यवसाय या उद्यम शुरू करने के लिए उत्तम समय है, क्योंकि सफलता की प्रबल संभावना है। आपको प्रतिष्ठित संगठनों से नौकरी के कुछ प्रस्ताव भी मिल सकते हैं।

आर्थिक गतिविधि

इस समयावधि के दौरान कुछ वित्तीय लाभ हो सकता है। आपको पारिवारिक सदस्यों या विरासत से वित्तीय सहायता प्राप्त हो सकती है। आपके पेशे से आय में संभावित वृद्धि के भी संकेत हैं। यह लंबी अवधि के उद्यमों में निवेश करने हेतु एक उत्तम समय है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

जो लोग अविवाहित हैं, उनके लिए गुरु इस समयावधि के दौरान प्रेम या रोमांटिक साथी पाने की संभावना को इंगित करता है। जो लोग प्रतिबद्ध रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, उनके लिए यह समयावधि कुछ चुनौतियां ला सकती है, लेकिन बृहस्पति के आशीर्वाद से आप उन पर काबू पा सकेंगे।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

आपका पारिवारिक जीवन शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण रहने की संभावना है। परिवार में कुछ शुभ कार्यक्रम हो सकते हैं, जैसे कि शादी या बच्चे का जन्म। आपको अपने पेशेवर प्रयासों में अपने परिवार के सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त हो सकता है।

संतान पक्ष

जिनके बच्चे हैं, उनकी वृद्धि और विकास के लिए बृहस्पति एक उत्तम समय को दर्शाता है। वे अपनी पढ़ाई या पाठ्येतर गतिविधियों में उत्.ष्टता प्राप्त कर सकते हैं। आप भी उनकी उपलब्धियों पर गर्व महसूस कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि के दौरान यात्रा के कुछ अवसर हो सकते हैं, विशेष रूप से काम या व्यवसाय से संबंधित उद्देश्यों के लिए। आप इस समयावधि के दौरान परिवार या दोस्तों के साथ कुछ मनोरंजक यात्राओं की योजना भी बना सकते हैं।

युक्तियाँ और सलाह

यह समयावधि कई सकारात्मक परिणाम ला सकती है, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जीवन में कुछ भी निश्चित नहीं है। आपको कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए, जमीन से जुड़े रहना चाहिए और आपके पास जो कुछ भी है उसके लिए .तज्ञता का अभ्यास करना चाहिए। साथ ही, अपने कार्यों और निर्णय के प्रति सचेत रहें, और जरूरत पड़ने पर किसी विश्वसनीय ज्योतिषी या गुरु का मार्गदर्शन लें।

himalayavedicworld.com

शनि का समय (22:06:2025 – 18:08:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

यह समयावधि आपके स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती है, और आप कुछ शारीरिक असुविधाओं का अनुभव कर सकते हैं। स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने की सलाह दी जाती है, जिसमें संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और किसी भी बड़ी स्वास्थ्य समस्या से बचने के लिए पर्याप्त आराम शामिल है।

शैक्षणिक भविष्य

यह समय अवधि उच्च शिक्षा या सीखने के अवसर ला सकती है। हालाँकि, यह एक चुनौतीपूर्ण समय भी हो सकता है, और आपको अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समय कठिन परिश्रम और अनुशासन के माध्यम से व्यावसायिक सफलता ला सकता है। हालांकि, यह चुनौतियों, देरी और जिम्मेदारियों का समय भी हो सकता है। आपको कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। अपने काम में एकाग्रचित्त और अनुशासित रहें और अंततः सफलता मिलेगी।

आर्थिक गतिविधि

यह समयावधि वित्तीय विकास के लिए बहुत अनुकूल नहीं हो सकती है। आय या लाभ प्राप्त करने में देरी या बाधाएँ हो सकती हैं। धन के मामलों में सतर्क रहने और जोखिम भरे निवेश से बचने की सलाह दी जाती है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि प्यार और रोमांस के लिए बहुत अनुकूल नहीं हो सकती है। रिश्तों में भावनात्मक पूर्ति और संतुष्टि की कमी हो सकती है। यदि आप प्रतिबद्ध रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, तो कुछ चुनौतियाँ हो सकती हैं जिन्हें धैर्य और समझदारी के साथ हल करने की आवश्यकता है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

इस समय अवधि के दौरान आपको अपने पारिवारिक जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य और समझ की कमी हो सकती है। शांतिपूर्ण और कूटनीतिक दृष्टिकोण बनाए रखना महत्वपूर्ण है। धैर्य और समझदारी के साथ किसी भी विवाद को हल करने का प्रयास करें।

संतान पक्ष

यह समयावधि बच्चों से जुड़ी कुछ चुनौतीया या जिम्मेदारियां ला सकती है। उनके साथ अच्छा संवाद और समझ बनाए रखने की सलाह दी जाती है।

यात्रा/ भ्रमण

यह यात्रा के लिए अनुकूल समय नहीं हो सकता है, और अनावश्यक यात्रा से बचने की सलाह दी जाती है।

युक्तियाँ और सलाह

यह समयावधि अवसर और चुनौतियाँ दोनों ला सकती है। अपने काम में अनुशासित, एकाग्रचित्त और धैर्यवान रहना महत्वपूर्ण है, और अपने आर्थिक मामलों में अनावश्यक जोखिम लेने से बचें। परिवार और प्रियजनों के साथ शांतिपूर्ण संबंध बनाए रखें, अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें और इस अवधि के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचें।

himalayavedicworld.com

बुध का समय (19:08:2025 – 09:10:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि में, आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना और एक स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखना महत्वपूर्ण है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और उचित आराम आपके स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यदि आप किसी भी स्वास्थ्य समस्या का अनुभव करते हैं तो चिकित्सकीय सलाह लेना महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक भविष्य

इस समयावधि में, आपको अपनी शिक्षा में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आप ध्यान केंद्रित करने और जानकारी को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। ध्यान केंद्रित रखना और इन चुनौतियों से उबरने के लिए कठिन परिश्रम करना महत्वपूर्ण है। ट्यूटर या परामर्शदाता से मदद लेना फायदेमंद हो सकता है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

इस समयावधि में, आपका करियर अपेक्षित रूप से आगे नहीं बढ़ सकता है। आपको कुछ असफलताओं या बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है जो आपके विकास में बाधा बन सकती हैं। ध्यान केंद्रित रखना और इन चुनौतियों से उबरने के लिए कठिन परिश्रम करना महत्वपूर्ण है। यह नए कौशल सीखने और अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए भी एक अच्छा समय है।

आर्थिक गतिविधि

अप्रत्याशित व्यय या नुकसान के कारण आपको वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने निवेश से सावधान रहने और किसी भी वित्तीय जोखिम से बचने की आवश्यकता हो सकती है। पैसा बचाना और किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

इस समयावधि में, आपके प्रेम संबंध में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके साथी के साथ कुछ गलतफहमियां या असहमति हो सकती है। धैर्य रखना और अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना महत्वपूर्ण है। शादीशुदा जातकों को अपने वैवाहिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। अपने साथी को समझना और उसका समर्थन करना महत्वपूर्ण है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

आपको अपने पारिवारिक जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। गलतफहमी या संघर्ष हो सकते हैं जिन्हें हल करने की आवश्यकता है। खुला संवाद बनाए रखना और समाधान खोजने की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है। इस समयावधि के अंत में आपके पारिवारिक सदस्यों के साथ आपके संबंध बेहतर हो सकते हैं।

संतान पक्ष

इस समयावधि में, आपको अपने बच्चों से संबंधित कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें अपनी शिक्षा या स्वास्थ्य में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। सहायक होना और उन्हें आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करना महत्वपूर्ण है। अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना उनके साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने में सहायक हो सकता है।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि में, आपके पास यात्रा करने के अवसर हो सकते हैं। यह काम या व्यक्तिगत कारणों से हो सकता है। अपनी यात्रा की सावधानी से योजना बनाना और किसी भी अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है। यात्रा आपको नए अनुभव प्राप्त करने और अपने परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाने में मदद कर सकती है।

युक्तियाँ और सलाह

इस समय अवधि के दौरान सकारात्मक और आशावादी बने रहना महत्वपूर्ण है। अपनी ताकत पर ध्यान दें और अपने लक्ष्यों की दिशा में काम करें। अनावश्यक जोखिम लेने से बचें और किसी भी अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार रहें। इस समयावधि के दौरान उत्पन्न होने वाली किसी भी चुनौती का संचालन करने के लिए किसी विश्वसनीय ज्योतिषी से मार्गदर्शन लेना भी महत्वपूर्ण है।

himalayavedicworld.com

केतु का समय (10:10:2025 – 30:10:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि के दौरान तनाव या चिंता से संबंधित कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। स्वस्थ आदतों को अपनाकर और जरूरत पड़ने पर पेशेवर मदद लेकर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक भविष्य

केतु शैक्षिक गतिविधियों में कुछ व्यवधान या परिवर्तन ला सकता है। अन्य चीजों से विचलित होने से बचने के लिए लक्ष्य के प्रति केंद्रित और प्रतिबद्ध रहना महत्वपूर्ण है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके कैरियर या पेशेवर जीवन में परिवर्तन और व्यवधान ला सकता है। अप्रत्याशित झटके या बाधाएँ हो सकती हैं, लेकिन यह लक्ष्यों और प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने का एक अवसर भी हो सकता है।

आर्थिक गतिविधि

इस समयावधि में वित्तीय अस्थिरता या अप्रत्याशित खर्च हो सकता है। निवेश में जोखिम लेने से बचना और इस दौरान खर्च करने में सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि प्रेम और वैवाहिक जीवन में कुछ चुनौतियाँ ला सकती है, जैसे कि भावनात्मक लगाव की कमी या गलतफहमी। संवाद और आपसी समझ इन मुद्दों को हल करने में मदद कर सकती है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

गलत संवाद या गलतफहमी के कारण पारिवारिक जीवन में कुछ समस्याएँ हो सकती हैं। सद्भाव बनाए रखने और संघर्षों से बचने के लिए धैर्य और समझदारी के साथ परिस्थितियों का सामना करना महत्वपूर्ण है।

संतान पक्ष

इस समयावधि के दौरान बच्चों से संबंधित कुछ मुद्दे या चुनौतियाँ हो सकती हैं। स्वस्थ संबंधों को बनाए रखने के लिए खुलकर संवाद करना और भावनात्मक समर्थन प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

यात्रा/ भ्रमण

इस समय के दौरान कुछ अप्रत्याशित यात्रा हो सकती है। आगे की योजना बनाना और उत्पन्न होने वाले किसी भी बदलाव या देरी के लिए तैयार रहना फायदेमंद हो सकता है।

युक्तियाँ और सलाह

इस अवधि के दौरान, धैर्य रखना और बदलाव के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है। आर्थिक और व्यावसायिक दोनों मामलों में अनावश्यक जोखिम लेने से बचें। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए स्वस्थ आदतों का अभ्यास करें। खुले तौर पर संवाद करें और कोई भी बाधा या चुनौतियाँ जो उत्पन्न हो सकती हैं, उन्हें दूर करने हेतु लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें।

himalayavedicworld.com

शुक्र का समय (31:10:2025 – 30:12:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि के दौरान आपके स्वास्थ्य को अतिरिक्त देखभाल और ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। काम और जीवन के अन्य क्षेत्रों से तनाव मानसिक और शारीरिक थकावट का कारण बन सकता है। सुनिश्चित करें कि पर्याप्त आराम मिले, पौष्टिक भोजन करें और शारीरिक गतिविधियों में संलग्न रहें ताकि आप अपने स्वास्थ्य को बनाए रख सकें।

शैक्षणिक भविष्य

यह उच्च शिक्षा या व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के छात्रों के लिए एक अनुकूल अवधि है। आप अपनी शैक्षणिक गतिविधियों म उत्.ष्टता प्राप्त कर सकते हैं और शिक्षकों या सलाहकारों से समर्थन प्राप्त कर सकते हैं।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

इस समयावधि के दौरान आपके करियर की संभावनाएं उज्ज्वल दिख रही हैं। आपको पदोन्नति, वेतन में वृद्धि या नौकरी का एक नया अवसर मिल सकता है जो आपके करियर के विकास में वृद्धि करेगा। यह आपकी प्रतिभा और कौशल दिखाने का एक अच्छा समय है, जैसा कि आप अपने कठिन परिश्रम और प्रयासों के लिए मान्यता प्राप्त कर सकते हैं। आपको काम से संबंधित उद्देश्यों के लिए विदेश यात्रा करने का भी मौका मिल सकता है।

आर्थिक गतिविधि

यह समयावधि आपके वित्तीय मामलों के लिए एक अनुकूल समय का संकेत देती है। आप एक नई परियोजना, साझेदारी या सहकारिता से वित्तीय लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपके व्यापारिक उपक्रमों के माध्यम से आपकी आय या लाभ में वृद्धि हो सकती है। आपको परिवार के किसी सदस्य से आर्थिक मदद या उपहार भी मिल सकता है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि प्रेम और वैवाहिक जीवन के लिए एक अनुकूल अवधि का संकेत देती है। आप काम या पेशेवर नेटवर्किंग के माध्यम से किसी विशेष व्यक्ति से मिल सकते हैं, या एक नए रोमांटिक रिश्ते में आ सकते हैं। जो लोग पहले से ही रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, उनके लिए अपने साथी के साथ और गहरा संबंध बनाने का यह एक अच्छा समय है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

यह समयावधि व्यस्त पेशेवर जीवन की ओर ले जा सकती है, जो आपके पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर सकती है। आपको काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता हो सकती है। हालाँकि, आपको अपने परिवार, विशेष रूप से अपने जीवनसाथी का समर्थन प्राप्त होगा, जो आपको अपने करियर के लक्ष्यों का पीछा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संतान पक्ष

शुक्र आपके बच्चों की भलाई और प्रगति के लिए एक अनुकूल अवधि का संकेत देता है। वे अपनी शैक्षणिक गतिविधियों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं या पाठ्येतर गतिविधियों में अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि में आपको काम से संबंधित उद्देश्यों के लिए विदेश यात्रा करने का मौका मिल सकता है, जो नई जगहों और संस्.तियों का पता लगाने के अवसर भी प्रदान कर सकता है। यात्रा रोमांचक और फायदेमंद दोनों हो सकती है।

युक्तियाँ और सलाह

यह आपके पेशेवर और वित्तीय विकास के लिए एक अनुकूल अवधि है, लेकिन काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाना सुनिश्चित करें। अपने स्वास्थ्य और कुशलता का ध्यान रखें, तथा अपने परिवार के लिए समय निकालें। अपने साथी और बच्चों के साथ–साथ अपने प्रियजनों के साथ भी स्वस्थ संबंध विकसित करने और बनाए रखने पर ध्यान दें।

himalayavedicworld.com

सूर्य का समय (31:12:2025 – 17:01:2026)

स्वास्थ्य और आरोग्य

व्यक्तिगत विकास और अन्वेषण पर आपका ध्यान आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। एक स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है और नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और स्वयं की देखभाल के माध्यम से अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

शैक्षणिक भविष्य

यह शिक्षा और सीखने के लिए एक अनुकूल समयावधि है। आप आगे की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, नए विषयों का पता लगा सकते हैं या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए यात्रा कर सकते हैं। यह आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक कौशल को बढ़ा सकता है और आपके समग्र विकास और विस्तार में योगदान दे सकता है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि करियर के विकास एवं विस्तार के लिए अनुकूल है। आपको नए अवसर या पदोन्नति प्राप्त हो सकती है अथवा आप नए व्यावसायिक पथ को चुनने का निर्णय ले सकते हैं। अपने करियर के लक्ष्यों पर केन्द्रित एवं समर्पित रहना महत्वपूर्ण है।

आर्थिक गतिविधि

यह समयावधि वित्तीय विकास और विस्तार के अवसर ला सकती है। आप यात्रा, शिक्षा, या निवेश के माध्यम से वित्ती लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने वित्त के प्रति सचेत रहें और अधिक खर्च करने से बचें।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यदि आप एक रिश्ते में हैं, तो यह आपके रिश्ते में वृद्धि और विस्तार के लिए एक अच्छी समयावधि है। आप अपने रिश्ते को अगले स्तर पर ले जाने का फैसला कर सकते हैं, जैसे सगाई या शादी करना। यदि आप अविवाहित हैं, तो आप यात्रा के दौरान या शिक्षा या सीखने के दौरान किसी से मिल सकते हैं।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

आपका पारिवारिक जीवन इस समयावधि में पिछड़ सकता है क्योंकि आप व्यक्तिगत विकास और करियर में उन्नति पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद अपने परिवार के सदस्यों के साथ संवाद करना और उनके लिए समय निकालना महत्वपूर्ण है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह उनके जीवन में वृद्धि और विस्तार के लिए अनुकूल समयावधि है। वे अपनी पढ़ाई में उत्.ष्टत प्राप्त कर सकते हैं, नई रुचियों का अनुसरण कर सकते हैं, या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए नए स्थानों की यात्रा कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

यह यात्रा और अन्वेषण के लिए एक अनुकूल समयावधि है। आप नई जगहों की यात्रा कर सकते हैं, नई संस्.तियों का पता लगा सकते हैं और नए दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

युक्तियाँ और सलाह

यह विकास, विस्तार और अन्वेषण का समय है। अपने वित्त के प्रति सावधान रहें और व्यर्थ के व्यय से बचें। अपने करियर के लक्ष्यों के प्रति केंद्रित और समर्पित रहें। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए समय निकालें। नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और स्वयं की देखभाल के माध्यम से अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आगे की शिक्षा प्राप्त करें, नए विषयों की खोज करें, या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए यात्रा करें। न स्थानों की यात्रा करें, नई संस्.तियों का पता लगाएं और नए .ष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्राप्त करें। अपने बच्चों को उनकी रुचियों को आगे बढ़ाने और उनकी पढ़ाई में उत्.ष्टता प्राप्त करने के लिए समर्थन और प्रोत्साहित करें।

himalayavedicworld.com

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.himalayavedicworld.com/Himalaya Vedic World makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him.If you follow advice given in this report, you do so at your own risk, www.himalayavedicworld.com/Himalaya Vedic World or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.himalayavedicworld.com/Himalaya Vedic World shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to Dehradun Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.

Please visit us at https://www.himalayavedicworld.com

Email: mail@himalayavedicworld.com

Phone: +91 7465839601

himalayavedicworld.com